RNI No.: UPHIN/25/A1697
GARVI GUJARAT
गरवी गुजरात
गरवी गुजरात
लखनऊ से प्रकाशित दैनिक
वर्ष : 01
अंक:335
दि. 08.04.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

16500 करोड़ के सरकारी ठेकों में बहुजन समाज की हिस्सेदारी पर सवाल, राहुल गांधी ने डेटा की कमी पर उठाए मुद्दे

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने देश में सार्वजनिक निर्माण और इंफ्रास्ट्रक्चर ठेकों में दलित, आदिवासी और अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के उद्यमियों की हिस्सेदारी को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार के पास इस बात का कोई डाटा ही नहीं है कि इन वर्गों को कितने ठेके दिए गए। राहुल गांधी ने फेसबुक पोस्ट के जरिए कहा कि उन्होंने पिछले साल दिए गए 16,500 करोड़ रुपये से अधिक के सार्वजनिक निर्माण ठेकों में एससी/एसटी और ह्क्ष्ट उद्यमियों की भागीदारी का पता लगाने की कोशिश की, लेकिन जवाब बेहद चिंताजनक था। उन्होंने कहा कि सरकार के पास इस संबंध में कोई ठोस जानकारी उपलब्ध नहीं है।

दरअसल, राहुल गांधी ने लोकसभा में अतारांकित प्रश्न संख्या 6264 के तहत आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय से पिछले पांच वर्षों में दिए गए ठेकों की संख्या और कुल मूल्य की जानकारी मांगी थी। इसके साथ ही उन्होंने यह भी पूछा था कि इनमें से कितने ठेके एससी/एसटी और ओबीसी स्वामित्व वाले व्यवसायों को दिए गए और क्या सरकार ने एससी/एसटी उद्यमों के लिए तय 4 प्रतिशत लक्ष्य को पूरा किया है। उन्होंने ओबीसी उद्यमियों के लिए भी ऐसे लक्ष्य तय करने की योजना पर सवाल उठाया। इस सवाल के जवाब में केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के राज्य मंत्री तोखन साहू ने बताया कि कुल ठेकों का डेटा तो उपलब्ध है, लेकिन एससी/एसटी और ओबीसी स्वामित्व वाले व्यवसायों को दिए गए ठेकों का कोई अलग ट्रैकिंग सिस्टम मौजूद नहीं है। उन्होंने कहा कि निर्माण ठेकों के लिए ऐसी ट्रैकिंग अनिवार्य नहीं है।

भाजपा की रैली में गरजे अमित शाह

कहा : असम की बराक घाटी में कांग्रेस ने घुसपैठियों को शरण दी

नई दिल्ली,एजेंसी। गृह मंत्री अमित शाह ने असम के श्रीभूमि जिले के पाथरकांडी विधानसभा क्षेत्र में एक जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी असम को घुसपैठियों का गढ़ नहीं बनने देगी और आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा सरकार बनाने की अपील की। शाह ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि राहुल बाबा, साफ सुन लीजिए, हम असम को घुसपैठियों का गढ़ नहीं बनने देंगे। उन्होंने विपक्ष पर वोट बैंक की राजनीति करने का आरोप लगाया। शाह ने कहा कि कांग्रेस ने असम की बराक घाटी की उपेक्षा की, उसके विकास के लिए कुछ नहीं किया। भाजपा सरकार ने घुसपैठियों की पहचान कर ली है

गृह मंत्री ने दावा किया कि भाजपा ने घुसपैठियों की पहचान कर ली है और सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार बनाइए, हमने घुसपैठियों की पहचान कर ली है।

सरकार बोली-सबरीमाला मंदिर में महिलाओं की एंट्री का फैसला गलत:

जस्टिस नागरत्ना बोलीं- महिला को महीने के 3 दिन 'अछूत' मानें, चौथे दिन नहीं, ऐसा क्यों

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट की 9 जजों की बेंच ने मंगलवार को केरलम के सबरीमाला मंदिर में महिलाओं को एंट्री देने का आदेश जारी रहे या नहीं इस पर पहले दिन की सुनवाई की।

केंद्र ने कहा- सबरीमाला मामले में गलत फैसला दिया गया था। उसे गलत कानून घोषित किया जाना चाहिए। मासिक धर्म आयु की महिलाओं के प्रवेश पर लगी रोक बरकरार रखी जाए। धार्मिक आस्था के मामले में अदालत को दखल नहीं करना चाहिए।

सुनवाई के दौरान जस्टिस नागरत्ना ने कहा इस मामले में 'अनुच्छेद 17' दलील पर किस तरह पेश किया जाए, यह मेरी समझ से बाहर है।

SG मेहता बोले- सबरीमाला मामले में गलत फैसला दिया गया था : SG मेहता ने कहा कि मैं अभी सबरीमाला मामले पर कोई बात नहीं कर रहा हूं। फिलहाल, आप सभी कानून से जुड़े सवालों की जांच कर रहे हैं। इसलिए अभी इस चर्चा को 'सुई जेनेरिस' (सुई जेनेरिस- अद्वितीय/विशेष प्रकृति) जैसे मामलों से प्रभावित होने देना सही नहीं होगा, हालांकि मेरा यह मानना है कि सबरीमाला मामले में गलत फैसला दिया गया था और उसे एक गलत कानून घोषित किया जाना चाहिए। इस नियम को लागू करते हुए, अगर अपील करने वालों की बात मान ली जाए, तो आर्टिकल 25(2)(b) अलग-अलग धार्मिक मंदिरों पर लागू होने में पूरी तरह से बेकार हो जाएगा, हालांकि, उस आर्टिकल की भाषा में वे शामिल हैं।

जम्मू-कश्मीर में 16 साल से फरार पाकिस्तानी आतंकी गिरफ्तार

श्रीनगर,एजेंसी। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने लश्कर-ए-तैयबा टेरर मॉड्यूल से जुड़े कुल 5 लोगों को अरेस्ट किया है। इनमें से दो पाकिस्तानी आतंकी हैं, बाकी उनके मददगार हैं। एक आतंकी की पहचान अब्दुल्ला उर्फ अबू हुरेरा के रूप में हुई है। अब्दुल्ला 16 साल से फरार था। वहीं, दूसरा पाकिस्तानी आतंकी उस्मान उर्फ खुबैब है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस के साथ-साथ सेंट्रल एजेंसियां भी इस ऑपरेशन में शामिल थीं। जम्मू-कश्मीर, राजस्थान और हरियाणा समेत 19 जगहों पर सर्च ऑपरेशन चलाया गया। कुछ सामान भी बरामद किया। जांच में स्न्ञ्ज्ञ के एक नेटवर्क का पता चला, जो आतंकवादियों को लॉजिस्टिक्स और फाइनेंशियल मदद करता था।

बॉर्डर पार हैंडलर्स के संपर्क में थे तीन मददगार : अधिकारियों के मुताबिक, पकड़े गए पांच लोगों में श्रीनगर के तीन लोग शामिल हैं। उन्होंने बताया कि मोहम्मद नकीब भट, आदिल राशिद भट और गुलाम मोहम्मद मीर उर्फ मामा को आतंकवादियों को पनाह और खाना समेत लॉजिस्टिक मदद देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है।

2010 में भारत में घुसे थे दो पाकिस्तानी आतंकी

अधिकारियों ने कहा कि जांच से पता चलता है कि एक अन्य आतंकवादी दूसरे राज्यों में लश्कर-ए-तैयबा नेटवर्क की मदद से जाली कागजात और पहचान के आधार पर देश से बाहर जाने में कामयाब रहा।

आतंकवादियों ने करीब 16 साल पहले भारत में घुसपैठ की थी, जिस दौरान वे कश्मीर घाटी के अलग-अलग जिलों में एक्टिव रहे। इन सालों में, उन्होंने करीब 40 आतंकवादियों को कमांड किया। इनमें से ज्यादातर को सुरक्षाबलों ने मार गिराया।

दावा- एअर इंडिया CEO कैंपबेल विल्सन ने इस्तीफा दिया

अहमदाबाद प्लेन क्रैश की रिपोर्ट आने के बाद पद छोड़ेंगे; सितंबर 2027 तक कार्यकाल था

नई दिल्ली,एजेंसी। एअर इंडिया के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर (CEO) कैंपबेल विल्सन ने इस्तीफा दे दिया है। न्यूज एजेंसी ANI ने मंगलवार को सूत्रों के हवाले से इसकी जानकारी दी। कई मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि एयर इंडिया ने नए CEO की तलाश भी शुरू कर दी है। सूत्रों के अनुसार, विल्सन सितंबर में अपना पद छोड़ सकते हैं। पिछले हफ्ते हुई कंपनी की बोर्ड बैठक में उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया है। विल्सन को 2022 में एअर इंडिया का CEO और प्रबंध निदेशक (MD) नियुक्त किया गया था। उनका कॉन्ट्रैक्ट 5 सालों के लिए, जुलाई 2027 तक था।

बंगाल में एसआईआर पर रार: सीएम ममता का आरोप- मतदाता सूची से विशेष समुदाय के लोगों के नाम कटे, लड़ेंगे कानूनी लड़ाई

कोलकाता,एजेंसी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने नदिया जिले के चकदहा में एक चुनावी रैली को संबोधित किया। उन्होंने आरोप लगाया कि अंतिम मतदाता सूची से विशेष समुदायों के लोगों के नाम हटाए गए हैं। उन्होंने इसे गंभीर मुद्दा बताते हुए कहा कि यह लोकतांत्रिक अधिकारों के खिलाफ है। ममता ने स्पष्ट किया कि टीएमसी ऐसे सभी लोगों के साथ खड़ी है और प्रभावित लोगों को न्याय दिलाने के लिए ट्रिब्यूनल में केस लड़ा जाएगा। 91 लाख मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए :ताजा चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, एसआईआर प्रक्रिया के बाद राज्य में करीब 91 लाख मतदाताओं के नाम सूची से हटा दिए गए हैं। हालांकि, मुख्यमंत्री ने

दावा किया कि सुप्रीम कोर्ट में उनके हस्तक्षेप के बाद न्यायिक निर्णय के तहत लंबित लगभग 60 लाख मामलों में से 32 लाख नाम बहाल किए गए हैं। पश्चिम बंगाल की 294 सदस्यीय विधानसभा के लिए चुनाव दो चरणों में 23 और 29 अप्रैल को होंगे, जबकि मतगणना 4 मई को की जाएगी।

वृंदावन में मोहन भागवत बोले:

गौसेवक बनाओ, गौहत्या रूक जाएगी

संत मलूक दास के जयंती उत्सव में शामिल हुए, संतों के पैर छुए

मथुरा,एजेंसी। संत मलूक दास की आज 452वीं जयंती है। वृंदावन के मलूक पीठ में उनका जन्मोत्सव कार्यक्रम मनाया जा रहा है। इसमें ऋस्स् प्रमुख मोहन भागवत पहुंचे। मंच पर संत रसिक माधव दास ने मोहन भागवत को शाल ओढ़ाकर स्वागत किया।

भागवत ने हाथ जोड़कर अभिवादन स्वीकार किया और पैर छूकर आशीर्वाद लिया। योग गुरु बाबा रामदेव भी संत मलूक दास की जयंती में पहुंचे। उन्होंने संत की समाधि के दर्शन-पूजन किए।

इस दौरान उन्होंने कहा- समाज में गौभक्त बनाया जाए तो गौहत्या अपने आप रुक जाएगी। जो लोग आज सत्ता में हैं, उनके मन में भी यह बात है। वे करना भी चाहते हैं, लेकिन कई तरह की दिक्कतें सामने आती हैं।

कृष्ण भक्त संत मलूक दास का जन्म कौशांबी में खत्री परिवार में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपनी साधना स्थली वृंदावन को बनाया। यहां उन्होंने यमुना किनारे वंशीवट पर अपनी कुटिया बनाई, जिसे मलूक पीठ के नाम से जाना जाता है। संत का गोलोक गमन (मृत्यु) वृंदावन में हुआ, जहां उनकी समाधि बनी हुई है।

- **भारत अब बनेगा विश्न गुरू**

उन्होंने कहा कि हमारे यहां व्यक्ति और समाज में ऐसा परिवर्तन आना चाहिए, जिसके लिए जरूरी उदाहरण संतों की मंडली हमारे पास मौजूद है। अब समय आ गया है जब भारत विश्व गुरु बनकर दुनिया को एक सुंदर अनुभव कराएगा।

- **समाज जैसा बनेगा, वैसा ही देश बनेगा**

उन्होंने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब पूरे भारत की यही सामूहिक इच्छा बन जाएगी। समाज जैसा बनेगा, देश भी वैसा ही बनेगा। इसलिए समाज कैसा हो, इसके लिए हमारे पास संतों की समृद्ध परंपरा मौजूद है और हमें उनका अधिक से अधिक अनुकरण करना चाहिए।

प्रधानमंत्री मोदी ने विश्व स्वास्थ्य दिवस पर स्वस्थ समाज के निर्माण का किया आह्वान

स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए मिलकर करें काम

नई दिल्ली,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए स्वस्थ समाज के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। प्रधानमंत्री मोदी ने ऐसे सभी व्यक्तियों के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की, जो दूसरों की सेवा में अथक परिश्रम करते हैं और एक स्वस्थ ग्रह की दिशा में काम करते हैं। उन्होंने कहा कि एक मजबूत और सशक्त राष्ट्र के लिए स्वस्थ नागरिकों का होना अत्यंत आवश्यक है। प्रधानमंत्री ने सभी से इस दिशा में सामूहिक प्रयास करने का आग्रह किया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की बात कही और कहा कि देश को स्वस्थ बनाने के लिए हर स्तर पर निरंतर काम करना जरूरी है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स संदेश में नागरिकों को शारीरिक रूप से सक्रिय रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए कहा कि हर व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने शारीरिक व्यायाम के महत्व को दर्शाने वाला एक संस्कृत सुभाषित भी साझा किया- 'लघुं कर्मसामर्थ्यं दीप्तोऽग्निर्मेदसः क्षयः। विभक्तघनगात्रत्वं व्यायामदुपजायते॥' प्रधानमंत्री मोदी ने इस श्लोक के माध्यम से बताया कि नियमित व्यायाम से कार्यक्षमता बढ़ती है, पाचन क्रिया बेहतर होती है, मोटापा कम होता है और शरीर मजबूत व सुडौल बनता है।

भारत की स्वास्थ्य प्रणाली पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय का उदाहरण- नड्डा

नई दिल्ली,एजेंसी। विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री जेपी नड्डा ने देशभर में लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने और संतुलित जीवनशैली अपनाने का संदेश दिया गया। मंगलवार को एक्स पर साझा किए अपने संदेश में नड्डा ने कहा कि भारत की स्वास्थ्य प्रणाली को पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय का उदाहरण है, जो न केवल देश बल्कि वैश्विक स्तर पर भी लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में योगदान दे रही है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वास्थ्य क्षेत्र में कई बड़े बदलाव हुए हैं।

तमिलनाडु में 9 पुलिसकर्मियों को फांसी की सजा

6 साल पहले बाप-बेटे की हिरासत में मौत हुई थी, कोविड लॉकडाउन में दुकान खोली थी

चेन्नई,एजेंसी। तमिलनाडु की मदुरै सेशन कोर्ट ने सोमवार को सथानकुलम कस्टोडियल डेथ केस में 9 पुलिसकर्मियों को मौत की सजा सुनाई। कोर्ट ने इसे 'रेयरेस्ट ऑफ रेयर' बताया। कहा कि अत्यधिक बर्बरता और सत्ता के दुरुपयोग का मामला है।कोर्ट ने सभी दोषियों को मृतकों के परिजन को 1 करोड़ 40 लाख

रुपए मुआवजा देने को कहा। यह मामला 2020 का है। छह साल तक सुनवाई चली। इस मामले में कुल 10 आरोपी थे। एक की कोविड के दौरान मौत हो गई। दरअसल, 19 जून 2020 को पुलिस ने मोबाइल कारोबारी पी. जयराज (59) और उनके बेटे जे. बेनिक्स (31) को हिरासत में लिया था।

ईरान के खार्ग आइलैंड पर हमला:

डेडलाइन खत्म होने से पहले ऑयल टर्मिनल को निशाना बनाया

ईरान बोला- अमेरिका के दोस्तों पर अटैक करेंगे

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन डीसी,एजेंसी।अमेरिका और इजराइल ने मंगलवार को ईरान के खार्ग आइलैंड पर हमला किया है। ईरानी मीडिया के मुताबिक, यहां ऑयल टर्मिनल को निशाना बनाया गया है।

ईरान के करीब 80 से 90% कच्चे तेल का निर्यात खार्ग आइलैंड से होता है। यहां बड़े तेल टर्मिनल, पाइपलाइन, स्टोरेज टैंक और जहाजों में तेल भरने की फैसिलिटी मौजूद हैं। इससे हर दिन करीब 70 लाख बैरल तक तेल जहाजों में भरा जा सकता है।अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कुछ दिन पहले धमकी दी थी कि अगर ईरान ने मंगलवार रात 8 बजे (अमेरिका समयानुसार) तक होर्मुज स्ट्रेट नहीं खोला तो उसके जरूरी इन्फ्रास्ट्रक्चर को निशाना बनाया जाएगा। अभी इस डेडलाइन को खत्म होने में 12 घंटे बाकी हैं।

वहीं ईरानी सेना ने कहा कि अब वे चुप नहीं बैठेंगे। अमेरिका और उसके साथियों के ठिकानों पर हमला किया जाएगा।

ईरान की धमकी- अब मिडिल ईस्ट के बाहर भी हमला करेंगे:

ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने मंगलवार को अमेरिका को कड़ी चेतावनी दी कि उनका जवाब सिर्फ मिडिल ईस्ट तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वह वहां के एनर्जी इन्फ्रास्ट्रक्चर को भी निशाना बना सकते हैं। गार्ड्स ने अपने बयान में कहा कि अब तक उन्होंने संयम बरता था, लेकिन अब वह खत्म हो चुका है। बयान में कहा गया कि ईरान अब अमेरिका और उसके सहयोगियों के ऐसे ढांचे को निशाना बना सकता है, जिससे उन्हें इस इलाके के तेल और गैस संसाधनों से दूर कर दिया जाए।

नवजोत सिद्धू की पत्नी ने नई पार्टी बनाई :घोषणा के वक्त पति साथ नहीं

लुधियाना,एजेंसी। पूर्व क्रिकेटर व कांग्रेस के पूर्व पंजाब अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू की पत्नी डॉ. नवजोत कौर सिद्धू ने नई पार्टी बना ली है। नवजोत कौर सिद्धू ने अपने ङ्ग हैंडल पर पोस्ट करते हुए नई पार्टी की घोषणा की।

नवजोत कौर सिद्धू ने एक फोटो पोस्ट की है, जिसके बैकग्राउंड में नई पार्टी का नाम भारतीय राष्ट्रवादी पार्टी लिखा है। उन्होंने पोस्ट में लिखा है कि बहुप्रतीक्षित घोषणा।

उसमें उन्होंने लिखा है- हमने राष्ट्रीय स्तर पर एक नए विकल्प का काम किया है, जिसमें हमने वर्तमान राजनीतिक नेताओं के प्रदर्शन मानकों का गहराई से अध्ययन और मूल्यांकन किया है। हम केवल अपने देश के लिए अपना जीवन समर्पित करना चाहते हैं और लोगों को वही देना

चाहते हैं, जिसके वे वास्तव में हकदार हैं और हमसे अपेक्षा रखते हैं।डॉ. नवजोत कौर ने सोशल मीडिया पर यह पोस्ट देर रात अपलोड की है। हालांकि, पार्टी की घोषणा करते वक्त उनके साथ उनके पति नवजोत सिंह सिद्धू नहीं दिख रहे। नवजोत कौर को पिछले साल कांग्रेस पार्टी से निकाला गया था। इसके बाद वह भाजपा से नजदीकियां बढ़ा रही थीं।

युद्ध अब सिर्फ युद्ध नहीं रहे!

परिचय दास

कभी युद्ध का अर्थ सीधा था–दो सेनाएँ, दो सीमाएँ और बीच में धूल, धुआँ, बारूद। तलवारें टकराती थीं तो आवाज़ दूर तक जाती थी। किसी नगर पर धावा होता था तो आकाश तक उसकी खबर पहुँचती थी। युद्ध दिखता था, सुनाई देता था और उससे डरना भी आसान था। अब युद्ध ने अपनी देह बदल ली है। उसने अपने हथियार छिपा लिए हैं और अपना चेहरा धोकर भीड़ में खड़ा हो गया है। अब वह घोषणा नहीं करता, धीरे-धीरे भीतर उतरता है, जैसे कोई आदत, जैसे कोई विश्वास।

अब युद्ध सिर्फ सीमाओं पर नहीं होते। वे हमारे हाथों में पकड़े छोटे-से यंत्र में भी चलते रहते हैं। हम उसे फोन कहते हैं, वह हमें दुनिया से जोड़ता है लेकिन उसी के भीतर एक और दुनिया है जहाँ शब्द हथियार बन जाते हैं, सूचना एक रणनीति हो जाती है और सच, किसी सॉफ़्टवेयर की तरह संपादित किया जा सकता है। यह एक ऐसा युद्ध है जिसमें गोली नहीं चलती पर एक अफ़वाह लाखों मनों को घायल कर देती है। यहाँ सैनिक नहीं दिखते पर स्क्रीन के पीछे बैठे लोग अदृश्य मोर्चे पर लगे होते हैं। यह युद्ध शोर नहीं करता पर धीरे-धीरे हमारी समझ को बदल देता है, हमारे निर्णयों को मोड़ देता है और हमें यह भी नहीं पता चलता कि हम कब एक विचार के पक्ष या विपक्ष में खड़े कर दिए गए।

आर्थिक युद्ध की प्रकृति भी उतनी ही विचित्र है। इसमें बम नहीं गिरते पर अर्थव्यवस्थाएँ ढह जाती हैं। मुद्रा का मूल्य एक अदृश्य आक्रमण का शिकार हो जाता है, व्यापारिक प्रतिबंध एक नए तरह की नाकेबंदी बन जाते हैं। किसी देश को हराने के लिए अब उसके शहरों को जलाना आवश्यक नहीं, उसके बाज़ारों को रोक देना ही पर्याप्त है। यह युद्ध इतना संयमित दिखाई देता है कि उसमें हिंसा की पहचान करना कठिन हो जाता है पर उसकी मार उतनी ही गहरी होती है–बेरोज़गारी के रूप में, महँगाई के रूप में, और उस अदृश्य भय के रूप में जो धीरे-धीरे लोगों के भीतर घर कर जाता है।

सांस्कृतिक युद्ध और भी सूक्ष्म है। यह हमारी भाषा में प्रवेश करता है, हमारे स्वाद को बदलता है, हमारी स्मृतियों को पुनर्लेखित करता है। यह हमें हमारे ही अतीत से थोड़ा-थोड़ा दूर करता है और एक नए वर्तमान में ढालता है जहाँ हम अपने ही प्रतीकों को पहचानने में हिचकने लगते हैं। यह युद्ध किसी सेना के साथ नहीं आता बल्कि गीतों, फिल्मों, विज्ञापनों, और जीवन-शैली के रूप में फैलता है। हम इसे अपनाते हैं, कभी स्वेच्छा से, कभी अनजाने में और धीरे-धीरे यह हमारी पहचान का हिस्सा बन जाता है। यह जीत इतनी शांत होती है कि पराजय का बोध भी नहीं होता।

इन तीनों रूपों में एक समानता है–ये युद्ध हमें सीधे घायल नहीं करते, बल्कि हमें बदलते हैं। वे हमारी दृष्टि को प्रभावित करते हैं, हमारी प्राथमिकताओं को पुनर्गठित करते हैं और हमारी संवेदनाओं को नई दिशा देते हैं। पहले युद्ध में शत्रु स्पष्ट होता था; अब वह धुंधला है। पहले युद्ध का अंत होता था–विजय या पराजय के साथ; अब इन युद्धों का कोई स्पष्ट अंत नहीं। वे चलते रहते हैं, हमारे जीवन के साथ-साथ, हमारी दिनचर्या के भीतर, हमारे विचारों के पीछे। इस बदलते हुए युद्ध-परिदृश्य में मनुष्य की स्थिति भी बदल गई है। वह अब सिर्फ एक नागरिक नहीं, एक उपभोक्ता भी है, एक उपयोगकर्ता भी और कई बार अनजाने में एक सहभागी भी।

वह उन सूचनाओं को साझा करता है जो किसी और के लिए हथियार बन सकती हैं। वह उन उत्पादों को खरीदता है जो किसी अर्थव्यवस्था को सशक्त या कमजोर कर सकते हैं। वह उन सांस्कृतिक प्रतीकों को अपनाता है जो किसी पहचान को मजबूत या क्षीण कर सकते हैं। इस प्रकार, वह स्वयं इस युद्ध का एक हिस्सा बन जाता है, बिना किसी औपचारिक घोषणा के। यह स्थिति एक अजीब-सी नैतिक उलझन भी पैदा करती है। जब युद्ध दिखाई नहीं देता, तब उसका विरोध कैसे किया जाए? जब शत्रु स्पष्ट नहीं, तब प्रतिरोध किसके विरुद्ध हो? जब हर सूचना संदिग्ध हो, तब सत्य की पहचान कैसे की जाए? ये प्रश्न हमारे समय के सबसे कठिन प्रश्नों में से हैं। इनका कोई सरल उत्तर नहीं, क्योंकि ये युद्ध सरल नहीं हैं।

फिर भी, इस जटिलता के बीच एक बात स्पष्ट होती है–कि युद्ध का केंद्र अब बाहरी नहीं, भीतरी हो गया है। यह हमारे भीतर घटित होता है। हमारी समझ, हमारी चेतना और हमारी संवेदना ही उसका मुख्य क्षेत्र हैं। जो इन पर नियंत्रण पा लेता है, वह बिना एक भी गोली चलाए जीत सकता है। और जो इनकी रक्षा नहीं कर पाता, वह बिना किसी औपचारिक पराजय के हार सकता है। शायद इसी कारण, आज सबसे बड़ी आवश्यकता किसी नई हथियार प्रणाली की नहीं बल्कि एक सजग दृष्टि की है। एक ऐसी दृष्टि जो सूचना और भ्रम के बीच अंतर कर सके, जो आकर्षण और प्रभाव के बीच भेद कर सके और जो अपने भीतर के संतुलन को बनाए रख सके। यह कोई आसान कार्य नहीं क्योंकि युद्ध अब बाहर से अधिक भीतर लड़ा जा रहा है।

यह कहना कि युद्ध अब सिर्फ युद्ध नहीं रहे, एक साधारण कथन नहीं बल्कि एक गहरी चिंता का संकेत है। यह उस समय की ओर इशारा करता है, जहाँ हिंसा ने अपने रूप बदल लिए हैं और हम अभी भी पुराने रूपों को पहचानने में व्यस्त हैं। जब तक हम यह नहीं समझेंगे कि युद्ध हमारे चारों ओर ही नहीं, हमारे भीतर भी चल रहा है, तब तक हम उसकी प्रकृति को नहीं समझ पाएँगे। और शायद, सबसे बड़ी चुनौती यही है–कि हम इस नए युद्ध को पहचानें, उसे समझें और उसके बीच अपनी मनुष्यता को बचाए रखें क्योंकि अंततः हर युद्ध का सबसे बड़ा दाँव यही होता है–मनुष्य का मनुष्य बने रहना।

समकालीन युद्धों का महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि इनमें स्पष्ट सीमाएँ धुंधली हो गई हैं। पहले युद्ध और शांति दो अलग अवस्थाएँ मानी जाती थीं पर अब दोनों के बीच की रेखा लगभग मिट चुकी है। रूस-यूक्रेन युद्ध में कई ऐसे क्षण आते हैं जब युद्ध औपचारिक रूप से सीमित दिखाई देता है लेकिन उसके प्रभाव वैश्विक स्तर पर फैल जाते हैं–ऊर्जा संकट, खाद्यान्न संकट और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अस्थिरता के रूप में। यह दिखाता है कि आधुनिक युद्ध किसी एक भूभाग तक सीमित नहीं रहते बल्कि पूरी दुनिया को अपनी परिधि में खींच लेते हैं।

इसी प्रकार ईरान- इजराइल अमेरिकी संघर्ष में प्रत्यक्ष युद्ध की अनुपस्थिति के बावजूद निरंतर तनाव बना रहता है। यहाँ युद्ध एक स्थायी स्थिति की तरह उपस्थित है–कभी साइबर हमलों के रूप में, कभी कूटनीतिक दबाव के रूप में और कभी अप्रत्यक्ष सैन्य कार्रवाइयों के रूप में। इस प्रकार का संघर्ष यह संकेत देता है कि आधुनिक युद्ध अब घटना नहीं, बल्कि प्रक्रिया बन चुके हैं–धीरे-धीरे, निरंतर और कई स्तरों पर घटित होते हुए।

युद्ध अब सिर्फ शरीर नहीं, मन को भी घेरता है। भय, असुरक्षा और अविश्वास धीरे-धीरे मनुष्य की स्थायी अवस्था बन जाते हैं। रूस-यूक्रेन जैसे संघर्ष में लोग केवल बमों से नहीं, अनिश्चित भविष्य से टूटते हैं। लगातार आती खबरें, प्रचार और अफवाहें मन को विचलित करती हैं। ईरान-इजराइल अमेरिका संघर्ष में यह तनाव पीढ़ियों तक फैलता है, जहाँ भय स्मृति बन जाता है। परिणामतः व्यक्ति भीतर से थक जाता है, संवेदनाएँ कुंद हो जाती हैं और सामान्य जीवन भी एक अदृश्य दबाव के नीचे जीया जाता है। इन युद्धों में सूचना का महत्व भी अत्यधिक बढ़ गया है। सूचना अब केवल समाचार नहीं रही बल्कि रणनीति का हिस्सा बन गई है। किस घटना को कैसे प्रस्तुत किया जाए, किस सत्य को प्रमुखता दी जाए और किसे छिपाया जाए–यह सब युद्ध की दिशा को प्रभावित करता है। इस संदर्भ में मीडिया, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म युद्ध के नए मैदान बन गए हैं। यहाँ विचारों की टकराहट उतनी ही तीव्र होती है, जितनी कभी सीमाओं पर हथियारों की हुआ करती थी। सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि इस बदलती हुई युद्ध-प्रकृति में मनुष्य कहाँ खड़ा है। वह अब केवल दर्शक नहीं रहा; वह एक सक्रिय भागीदार बन गया है। उसके विचार, उसकी पसंद, उसकी प्रतिक्रियाएँ–सब इस वैश्विक संघर्ष का हिस्सा बन जाती हैं। वह बिना जाने ही किसी पक्ष का समर्थन करने लगता है और इस प्रकार युद्ध उसके भीतर भी प्रवेश कर जाता है।

इन उदाहरणों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक युद्ध केवल बाहरी टकराव नहीं हैं बल्कि वे मनुष्य की चेतना, उसकी अर्थव्यवस्था और उसकी संस्कृति तक फैल चुके हैं।

पाप का नगर

भले ही हम चेस्टर हिल नामक परियोजना में मीन मेख निकालते-निकालते राजनीतिक, ब्यूरोक्रेसी और व्यवस्था के गलियारों को कोसते रहें, मगर सच यह भी है कि पहाड़ की छाती पर हर कोई मूंग दल रहा है। ताजातरीन उदाहरण में सोलन के चेस्टर हिल परियोजना का दानव गुल खिला रहा है। एक वकील की शिकायत पर कई प्रशासनिक अधिकारी सिरमुंडे हो गए, तो पूरी परियोजना ने एक साथ कई प्रश्न छील दिए। अब जांच की दूरबीन से शिकार होगा या यह सच कभी सामने आएगा कि नई बस्तियों में कितना 'सामान' बिका है। पिछले कई वर्षों से एक शाश्वत आरोप झूम रहा है। हिमाचल की नई दौलत में पूरा प्रदेश बिक रहा है। भले ही फाटक धारा-118 के रौब से बंद दिखाई दें या उसूलों की गिनती में जानकारियां और जांच बंटती रहे, मगर सत्य यह है कि विकास की हर टहनी उपद्रवग्रस्त है। इसीलिए धर्मशाला केंद्रीय विश्वविद्यालय में कांगड़ा भूकंप के संदर्भ में मंथन हुआ, तो विख्यात भू विज्ञानी एवं पद्मश्री डा. हर्ष गुप्ता को कहना पड़ता है कि शिमला-मकलोडगंज की बहुमंजिला इमारतें कफन ओढ़े खड़ी हैं। परवाणू से शिमला और चेस्टर हिल के नजदीक घातक पैमानों से पैमाइश हो रही है। अब हिमाचल सिस्मिक जोन-5 से आगे कहीं छह की पारिस्थितिकीय भुजाओं में लटका है, तो समस्या के अंतहीन सिलसिले में कई खलनायक पैदा हो चुके हैं। यह जमीन और जिरह के बीच कानून खोजा जा रहा है, जबकि जरूरत और जिंदगी के बीच न्याय होना चाहिए। चेस्टर हिल परियोजना में क्या हुआ, कैसे जमीन बिकी, भूमि का भूगर्भीय अध्ययन क्या कहता है या भ्रष्टाचार किस-किस स्तर पर हुआ, इससे भी अलग एक समाधान यह भी कि हिमाचल में बसने को जगह नहीं तथा जिंदगी को आशियाना चाहिए।

ऐसी सौ और परियोजनाएं भी उभर आएं, तो ग्राहकों की कमी नहीं, लेकिन हर अवतार में कोई न कोई कसूरवार रहेगा। अब यह जांच किसके सिर बोलती है या किसके सिर चढ़ती है, लेकिन हमने तब भी सुना था जब सोलन जिला में इसी तरह कई निजी विश्वविद्यालय खुल गए थे और अब फोरलेन के किलोमीटर की औसत में सडक़ के किनारे पहाड़ पर मॉल चढ़ गए हैं। हमें गिला न भौगोलिक परिस्थिति से और न ही कानून के पहरे हमें रोक पा रहे हैं। हिमाचल में आ रही दौलत के लिए जमीन बिक रही है। ऐसे में पाचं दशक पहले आए टीसीपी कानून की धज्जियां कौन उड़ा रहा है। और यह सिर्फ चेस्टर हिल नहीं शिमला, मकलोडगंज, कसौली, डलहौजी या किसी भी शहर में प्रवेश करते देखना कि मंजिलें बेआबरू होकर, जमीन को कोसती हैं। ऐसे में पूरे प्रदेश में टीसीपी एक्ट लागू होना चाहिए तथा इसी की भावना में जमीन की पूलिंग, नई संरचना की मंजूरी और वैज्ञानिक ढंग से आबाद होने की छूट चाहिए। विकास एक तरफा हो रहा है, तो अनुमतियों के ग्रॉफ में सरकारी पापड़ बेलने की प्रथा ने कई चोर गलियां आबाद कर दीं। यही चोर गली चेस्टर हिल्स का मिलन शिमला के तंत्र से करवा रही थी, मगर आज अगर भाजपा के पास कहने को है तो सारे गड़े मुर्दे उसकी सरकारों को भी कोसते हैं।

होरमुज संकट और भारत की तैयारी – रणनीति या सिर्फ समय खरीदने की कोशिश?

भूपेन्द्र गुप्ता

होरमुज जलडमरूमध्य में बढ़ता तनाव एक बार फिर यह याद दिला रहा है कि भारत की ऊर्जा सुरक्षा कितनी नाजुक नींव पर खड़ी है। सरकार चाहे जितने भी दावे करे, सच्चाई यह है कि भारत आज भी अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए बाहरी दुनिया पर अत्यधिक निर्भर है। ऐसे में सवाल उठता है–क्या सरकार की वर्तमान रणनीति वास्तव में दूरदर्शी है या सिर्फ संकट को टालने की कोशिश?

सबसे पहले बात करते हैं तेल सप्लाई स्रोतों की विविधता की। सरकार इसे अपनी बड़ी उपलब्धि के रूप में पेश करती है कि उसने मध्य पूर्व के अलावा रूस, अमेरिका और अफ्रीका से तेल खरीद बढ़ाई है। लेकिन यह आधा सच है। रूस से सस्ता तेल खरीदना एक अवसर जरूर था, लेकिन यह स्थायी समाधान नहीं है। भू-राजनीतिक परिस्थितियां कभी भी बदल सकती हैं। अमेरिका से तेल महंगा है और अफ्रीका से आपूर्ति स्थिर नहीं रहती। यानी अन्य स्रोतो ने जोखिम तो कम किया है, खत्म नहीं किया।

दूसरा बड़ा दावा है रणनीतिक पेट्रोलियम रिजर्व (एसपीआर) का। सरकार ने भंडारण क्षमता बढ़ाने की योजना बनाई है, लेकिन वास्तविकता यह है कि वर्तमान भंडारण केवल कुछ दिनों की जरूरत ही पूरी कर सकता है। अगर होरमुज लंबे समय तक बंद रहता है, तो यह रिजर्व ऊंट के मुंह में जीरा साबित होगा। सवाल यह है कि जब भारत दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का दावा करता है, तो उसकी ऊर्जा सुरक्षा इतनी सीमित क्यों है?

तीसरा पहलू है नौसेना और सामुद्रिक सुरक्षा। भारतीय नौसेना की तैनाती और एस्कॉर्ट मिशन निश्चित रूप से महत्वपूर्ण हैं, लेकिन यह समाधान नहीं बल्कि संकट कम करना है। समुद्र में जहाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करना जरूरी है, पर अगर रास्ता ही बंद हो जाए तो सुरक्षा किस काम की?

अब आते हैं सबसे महत्वपूर्ण पहलू–कूटनीति। भारत की 'सबके साथ संतुलन' वाली नीति को अक्सर उसकी ताकत बताया जाता है। लेकिन यह संतुलन भी जोखिम से भरा है। ईरान, अमेरिका, सऊदी अरब और रूस–इन सभी के साथ संबंध बनाए रखना आसान नहीं है। किसी भी बड़े संघर्ष की स्थिति में यह संतुलन टूट सकता है, और तब भारत के पास विकल्प सीमित हो जाएंगे।

सरकार का एक और बड़ा तर्क है ऊर्जा की वैकल्पिकता का–यानी सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन और ग्रीन हाइड्रोजन। यह निश्चित रूप से भविष्य की दिशा है, लेकिन वर्तमान संकट का समाधान नहीं। भारत में अभी भी परिवहन और उद्योग का बड़ा हिस्सा तेल पर निर्भर है। ऊर्जा संक्रमण की गति इतनी धीमी है कि निकट भविष्य में इसका असर सीमित ही रहेगा।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि इन सभी प्रयासों के बावजूद भारत की मूल समस्या जस की तस बनी हुई है–88% तेल आयात पर निर्भरता। जब तक यह निर्भरता कम नहीं होती, तब तक हर अंतरराष्ट्रीय संकट भारत की अर्थव्यवस्था को झकझोरता रहेगा।

राजनीतिक स्तर पर भी यह मुद्दा बेहद संवेदनशील है। तेल की कीमतें बढ़ती हैं तो महंगाई बढ़ती है, और महंगाई सीधे सरकार की लोकप्रियता को प्रभावित करती है। इसलिए अक्सर देखा गया है कि सरकारें अल्पकालिक उपायों–जैसे टैक्स में कटौती या तेल कंपनियों पर दबाव–का सहारा लेती हैं। लेकिन ये उपाय दीर्घकालिक समाधान नहीं हैं, बल्कि सिर्फ चुनावी प्रबंधन के औजार हैं।

तो समाधान क्या है? सबसे पहले, भारत को अपनी ऊर्जा नीति में वास्तविक सुधार करना होगा। घरेलू उत्पादन को बढ़ाना, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों में तेज निवेश करना और ऊर्जा दक्षता को प्राथमिकता देना जरूरी है। दूसरा, एसपीआर को वैश्विक मानकों के अनुसार बढ़ाना होगा ताकि कम से कम 60 से 90 दिनों का भंडारण सुनिश्चित किया जा सके। तीसरा, विदेश नीति में ऊर्जा सुरक्षा को केंद्र में रखना होगा, न कि सिर्फ संतुलन साधने की कोशिश।

अंततः, होरमुज संकट ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत की ऊर्जा रणनीति अभी अधूरी है। सरकार ने कुछ कदम जरूर उठाए हैं, लेकिन वे पर्याप्त नहीं हैं। यह समय है कठोर फैसले लेने का, क्योंकि ऊर्जा सुरक्षा सिर्फ आर्थिक मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का सवाल है।

अगर अभी भी हम नहीं जागे, तो अगला संकट केवल चेतावनी नहीं, बम एक गंभीर झटका साबित हो सकता है।

खरगे प्रसंग : तब ऐसी अशिक्षा क्या बुरी है!

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने केरल में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए गुजरात के लोगों को लेकर कहा है कि वहां के लोग 'अशिक्षित' हैं, इसलिए वहां के लोगों को पीएम मोदी आसानी से गुमराह कर सकते हैं, लेकिन केरल के लोग ज्यादा समझदार और शिक्षित हैं, इसलिए उन्हें कोई भ्रमित नहीं कर सकता। निश्चित ही यह कहकर खरगे ने न सिर्फ गुजरात के लोगों का, बल्कि उन सभी राज्यों में निवासरत भारतवासियों का अपमान किया है, जहां भी भारतीय जनता पार्टी की सरकार है।

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

देश में वर्तमान स्थिति के अनुसार, भारतीय जनता पार्टी और उसके नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) का भारतीय राजनीति में व्यापक विस्तार है। भाजपा सीधे तौर पर या गठबंधन के माध्यम से देश के 21 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में सत्ता में है। एक तरह से देखें तो उत्तर भारत (हिंदी हृदयस्थल), पश्चिम भारत और उत्तर-पूर्व भारत के अधिकांश हिस्से में भाजपा का सीधा प्रभाव है, जबकि आंध्र प्रदेश और बिहार, महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर के महत्वपूर्ण राज्यों में यह बड़े क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ मजबूती से जुड़ी हुई है। यह भी एक तथ्य है कि भाजपा और उसके सहयोगियों वाले राज्य भारत की लगभग 60 फीसद से अधिक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 58 से 62 प्रतिशत से अधिक हिस्सा उन राज्यों में आता है जहाँ कि आज भाजपा या एनडीए की सरकारें हैं।

अब इस दिए गए खरगे के बयान के बाद गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने कहा है कि 'कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे जी द्वारा गुजरात के लोगों के संदर्भ में दिए गए बयान अत्यंत आपत्तिजनक और दुर्भाग्यपूर्ण हैं। इस प्रकार की टिप्पणी न केवल 6 करोड़ गुजरातवासियों का अपमान है, बल्कि महात्मा गांधी और सरदार पटेल की पावन धरती की गरिमा को भी ठेस पहुंचाती है।' गुजरात ने हमेशा राष्ट्र निर्माण, विकास और एकता में अग्रणी भूमिका निभाई है और आगे भी करता रहेगा। ऐसे बयान कांग्रेस की संकीर्ण सोच को दर्शाते हैं। यह टिप्पणी स्पष्ट करती है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की विकास की राजनीति और उसे मिल रहे व्यापक जनसमर्थन से कांग्रेस कितना असहज और असुरक्षित महसूस कर रही है।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की तरह ही अन्य विरोध के स्वर भी सामने आए हैं, जिन्होंने सीधे तौर पर कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बयान को सिरे से नकारते हुए इसे अनुचित एवं देश के आमनागरिकों का अपमान बताया है। कभी-कभी लगता है कि पिछले 11 सालों से अधिक समय से केंद्रीय सत्ता से दूर रहने के बाद भी शायद कांग्रेस समझना नहीं चाहती! यदि वास्तव में देश की जनता के मर्म को समझती तो इस तरह के संकुचित और स्वयं से भड़ास केंद्रित बयान कम से कम कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तो नहीं देते। फिर इस बयान के संदर्भ में एक दूसरा दृष्टिकोण भी है, वह यह कि यदि गुजरात के लोग अशिक्षित भी हैं तो क्या बुरा है? वे जीवन का सत्य तो गहराई से पहचानते हैं!

यदि खरगे केरल से गुजरात की तुलना कर भी रहे हैं तो देखें कि दोनों ही राज्य आज कहां खड़े हुए हैं। वस्तुतः भारत के विकास परिदृश्य में केरल और गुजरात दो ऐसे राज्य हैं, जो भिन्न विकास मॉडलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। केरल को जहाँ सामाजिक विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और मानव विकास सूचकांक के लिए जाना जाता है, वहीं गुजरात आर्थिक वृद्धि, औद्योगिकीकरण और निवेश के क्षेत्र में अग्रणी है। तुलनात्मक अध्ययन से ध्यान में आता है कि कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में गुजरात आगे है।

अध्ययन जनसंख्या से आरंभ करते हैं; गुजरात की जनसंख्या लगभग 7.3 से 7.5 करोड़ है, जो केरल की लगभग 3.5 करोड़ जनसंख्या से दोगुनी से अधिक है। सामान्यतः यह अपेक्षा की जाती है कि अधिक जनसंख्या वाले राज्य में संसाधनों पर दबाव अधिक होगा, बेरोजगारी और अपराध जैसी समस्याएँ अधिक होंगी, किंतु वास्तविकता इसके विपरीत दिखाई देती है। गुजरात, अपनी बड़ी जनसंख्या के बावजूद, रोजगार सृजन, औद्योगिक विस्तार और आर्थिक अवसरों के माध्यम से इन चुनौतियों को नियंत्रित करने में सफल रहा है। इसके विपरीत, केरल में कम जनसंख्या होने के बावजूद बेरोजगारी दर अधिक है।

यहां बेरोजगारी दर 2025-26 में लगभग 7-8 फीसद के आसपास है। इसके विपरीत, गुजरात में बेरोजगारी दर मात्र 2-3 प्रतिशत है, जोकि देश में सबसे कम में से एक है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि केवल शिक्षा दर उच्च होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि आर्थिक संरचना और रोजगार सृजन की क्षमता अधिक महत्वपूर्ण है, जिसमें कि गुजरात आगे है। केरल की साक्षरता दर लगभग 96 फीसद है, जबकि गुजरात की 80-85 फीसद के बीच है, किन्तु इस उपलब्धि के बावजूद, यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या शिक्षा की ये उपलब्धि आर्थिक अवसरों में परिवर्तित हो रही हैं? उच्च शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी इस बात का संकेत देती है कि केरल की सामाजिक प्रगति आर्थिक संरचना से पूरी तरह जुड़ नहीं पाई है।इसके विपरीत, गुजरात ने शिक्षा में अपेक्षाकृत कम प्रदर्शन के बावजूद आर्थिक अवसरों का विस्तार कर संतुलन स्थापित किया है।

आर्थिक दृष्टि से गुजरात का प्रदर्शन अत्यंत प्रभावशाली रहा है। 2025-26 में गुजरात का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) लगभग ?29-30 लाख करोड़ के आसपास पहुँच चुका है, जबकि केरल का जीएसडीपी लगभग ?14-15 लाख करोड़ है। विदेशी निवेश (एफडीआई) के मामले में भी गुजरात लगातार शीर्ष राज्यों में बना हुआ है। 2025 तक यह राज्य अरबों डॉलर का निवेश आकर्षित कर चुका है। गुजरात की सबसे बड़ी ताकत उसका औद्योगिक आधार है। पेट्रोकेमिकल, फार्मा, ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल और बंदरगाह आधारित उद्योगों ने इसे भारत का औद्योगिक केंद्र बना दिया है। कहना होगा कि किसी भी राज्य में उसकी समग्र सफलता के लिए दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता और विकास के लिए औद्योगिक आधार अत्यंत महत्वपूर्ण है और इस क्षेत्र में गुजरात की बढ़त निर्णायक है।

प्रति व्यक्ति आय के स्तर पर दोनों राज्य लगभग समान दिखाई देते हैं, किंतु वृद्धि दर और औद्योगिक योगदान के मामले में गुजरात आगे है। गुजरात की अर्थव्यवस्था में उद्योगों का योगदान 50 फीसद से अधिक है, जबकि केरल में सेवा क्षेत्र प्रमुख है। यहां के लोग अधिकांश राज्य से बाहर जाकर धन अर्जित करते हैं, जबकि गुजराती अपने लिए तो धनार्जन करते ही हैं,वह दूसरों को भी बड़ी संख्या में रोजगार उपलब्ध कराते हैं। यही कारण है जो आज गुजरात भारत के कुल निर्यात का लगभग 25-27 प्रतिशत योगदान देता है। इस प्रकार, आर्थिक विस्तार और उत्पादन क्षमता के मामले में गुजरात स्पष्ट रूप से केरल से बहुत आगे है।

एक और महत्वपूर्ण पहलू अपराध दर है। केरल में प्रति लाख जनसंख्या पर अपराध दर अधिक दर्ज की गई है, जबकि गुजरात में यह अपेक्षाकृत कम है। गुजरात में अपेक्षाकृत कम अपराध दर आज यह दर्शाती है कि आर्थिक अवसर और रोजगार सामाजिक स्थिरता में योगदान देते हैं। वहीं, गुजरात ने सड़क, बिजली, बंदरगाह और औद्योगिक कॉरिडोर के विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है। यह राज्य 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' में लगातार शीर्ष पर रहा है, जिससे निवेश आकर्षित हुआ है। केरल में स्वास्थ्य और शिक्षा का बुनियादी ढांचा मजबूत है, लेकिन भौतिक इंफ्रास्ट्रक्चर और औद्योगिक सुविधाओं में अपेक्षाकृत कमी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास के लिए भौतिक इंफ्रास्ट्रक्चर अत्यंत आवश्यक है, जिसमें गुजरात आगे है।

आज गुजरात में राजस्व अधिशेष और नियंत्रित ऋण स्तर देखने को मिलता है। इसके विपरीत, केरल उच्च राजस्व घाटे और बढ़ते ऋण से जूझ रहा है। विशेष रूप से यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि अधिक जनसंख्या और संसाधन दबाव के बावजूद गुजरात ने बेरोजगारी, अपराध और आर्थिक विकास जैसे क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन किया है। इसके बाद भी आश्चर्य होता है कि देश में लम्बे समय तक शासन में रही पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष गुजरात की सफलता को नकारता है, वहां के लोगों को अशिक्षित कहता है !निश्चित तौर पर यह कांग्रेस की छोटी सोच को दर्शाने वाला बयान है, जिसकी जितनी भी आलोचना होगी वह कम ही है।

आज का राशिफल

मेष- शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। अर्थपक्ष मजबूत रहेगा। शुभांक-3-5-7

वृष- अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। विपरीत परीस्थितियों में भी हानि नहीं होगी। आवेश में आना आपके हित में नहीं होगा इसलिए व्यवहार व वाणी पर नियत्रंण रखें। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। शुभांक-5-6-9

मिथुन- व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-2-6-8

कर्क- समय पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। पुराने मित्र से मिलन होगा। शुभांक-4-6-7

सिंह- मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। परिवारजनों का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। शुभांक-3-5-8

कन्या- जीवनसाथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। कार्य सफल होंगे। शुभांक-2-5-7

तुला- प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। सभा-गोष्ठियों में सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच आनन्ददायक दिन रहेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-6-8-9

वृश्चिक- स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की दौड़-भाग से यदि बचा जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। आय के अच्छे योग बनेगें। संतान की उन्नति के योग हैं। शुभांक-5-6-8

धनु- आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध होंगे। कोई प्रिय वस्तु या नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभाओं में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। माता पक्ष से विशेष लाभ। पुराने मित्र से मिलन होगा। आत्मचिंतन करें। शुभांक-4-6-8

मकर- लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। कारोबारी काम में बाधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। शुभांक-3-6-9

कुंभ- पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मित्र से मिलन होगा। शुभांक-1-5-8

मीन- धम-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। लाभ में आशातीत वृद्धि तय हैं मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। किसी पुराने संकल्प को पुरा कर लेने का दिन हैं। आगे-आगे गौरख जागे वाली कहावत चरितार्थ होगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। इच्छित कार्य सफल होंगें। शुभांक-1.6.9

RNI No.: UPHIN/25/A1697 Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : ASHWANI KUMAR
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

किडनी कांड के दो आरोपियों का नोटों की गड्डियों संग वीडियो वायरल

मेरठ , एजेंसी।कानपुर पुलिस के किडनी कांड की जांच के दौरान एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। इस वीडियो में किडनी कांड के आरोपी अफजाल और परवेज सैफी नोटों की गड्डियों के साथ दिखाई दे रहे हैं। इधर, मेरठ पुलिस को जानकारी मिली है कि कानपुर पुलिस ने आरोपी परवेज सैफी को हिरासत में लिया है।

कानपुर के किडनी कांड में अल्फा अस्पताल के डॉ. अमित चौधरी, डॉ. वैभव मुद्गल और डॉ. अफजाल का नाम सामने आया था। इसके बाद से कानपुर पुलिस जांच और आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास में जुटी है। 16 सेकंड के वायरल हुए वीडियो में डॉ. अफजाल के साथ गाजियाबाद का लूट का आरोपी परवेज सैफी भी बताया गया है। कानपुर पुलिस की जांच में सामने आया है कि परवेज सैफी आरोपियों को किडनी ट्रांसप्लांट के लिए आने-जाने के लिए गाड़ियां उपलब्ध कराता था। परवेज ही आरोपियों को ट्रांसप्लांट के लिए 31 मार्च को आहूजा हॉस्पिटल लाया था। परवेज सैफी गाजियाबाद से लूट और डकैती में जेल भेजा जा चुका है। इस वीडियो के वायरल होने के बाद छात्र नेता विनीत चपराना ने किडनी कांड से जुड़े सभी आरोपियों की संपत्ति की जांच कराने की मांग की है। एसपी सिटी आयुष विक्रम सिंह का कहना है कि आरोपी परवेज सैफी को हिरासत में लेने की सूचना मिली है। हालांकि कानपुर पुलिस ने उसे कहां से और कब पकड़ा है। इसकी जानकारी नहीं है।

समस्या के समाधान के लिए नई तकनीकों का उपयोग जरूरी : डॉ. मोनिका

मेरठ , एजेंसी। इस्माईल नेशनल महिला पीजी कॉलेज में सोमवार को अर्थशास्त्र विभाग की ओर से 30 घंटे के वैल्यू एडेड कोर्स का समापन हो गया। कोर्स का विषय क्वांटिटेटिव एंड क्वालिटेटिव टेक्नीक्स इन रिसर्च मेथडोलॉजिस्ट रहा। आईक्यूएसी कोऑर्डिनेटर प्रो. दीप्ति कौशिक ने आज के वैश्वीकरण और बढ़ते एआई के उपयोग के दौर में आगे होने वाले शोध को और भी प्रासंगिक बताया। कोर्स कोऑर्डिनेटर डॉ. मोनिका ने कहा कि सामाजिक समस्या और उसके समाधान के लिए नई तकनीकों का उपयोग जरूरी है। कार्यक्रम में डॉ. दीक्षा व अन्य प्रवक्ताओं सहित 40 छात्राएं मौजूद रहीं। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि डॉ. स्वर्णा रहीं। इधर, कॉलेज में पुरातन छात्र समिति की ओर से आयोजित मैत्री कार्यक्रम के चौथे दिन पर बीएड विभाग, राजनीति विभाग, विज्ञान विभाग व संगीत विभाग की ओर से छात्राओं को आमंत्रित किया गया। उन्होंने व्यावसायिक परामर्श विषय पर अपने विचार रखे। बीएड विभाग में इस्माईल कॉलेज की लेक्चरर जेब जेडी, राजनीति विभाग में नेट क्वालिफाइड नेहा जोशी और विज्ञान विभाग से मीनाक्षी ने अपने अनुभव साझा किए। विज्ञान विभाग की मीनाक्षी ने विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध तकनीकी क्षेत्र में बढ़ती संभावनाओं के बारे में जानकारी दी।

यूपी में ट्रेन पलटाने की साजिश : रेलवे ट्रैक पर रखा था लोहे का एंगल, लोको पायलट की सूझबूझ से टला बड़ा हादसा

वाराणसी , एजेंसी।मऊ-आजमगढ़ रेलवे ट्रैक पर पैसेंजर ट्रेन को पलटाने की साजिश की गई। रविवार की रात सठियांव रेलवे स्टेशन के फाटक के निकट रेलवे ट्रैक पर लोहे का एंगल रखा मिला। ट्रेन धीमी होने के चलते लोको पायलट ने दूर से देख लिया और ट्रेन रोक ली। इसकी सूचना रेलवे विभाग को देते हुए लोको पायलट ट्रेन बैक कर दूसरी पटरी से ट्रेन को लेकर आजमगढ़ पहुंचा और आरपीएफ को सूचना दी। सूचना मिलते ही आरपीएफ और जीआरपी मौके पर पहुंची। ट्रैक से लोहे के एंगल को हटवाया और अज्ञात के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी।रविवार को बलिया से शाहगंज को जाने वाली पैसेंजर ट्रेन रोज की भांति मऊ से चलकर सठियांव पहुंची। सठियांव स्टेशन से करीब साढ़े आठ बजे वह आजमगढ़ के लिए निकली। स्टेशन से 100 मीटर आगे ट्रेन जैसे ही रेलवे फाटक के पास पहुंची कि ट्रेन के लोको पायलट को रेलवे ट्रैक पर कुछ रखा दिख गया। धीमी गति से ट्रेन होने के चलते लोको पायलट ने ट्रेन रोक दिया। लोको पायलट ने नजदीक जाकर देखा तो ट्रैक पर लोहे का एंगल रखा हुआ था। लोको पायलट ने ट्रेन को पीछे किया फिर दूसरे ट्रैक से वह इसे लेकर आजमगढ़ रेलवे स्टेशन पहुंचा। जहां लोको पायलट ने इसकी सूचना आरपीएफ को दी। सूचना मिलते ही आरपीएफ और जीआरपी मौके पर पहुंचे। रेलवे ट्रैक से लोहे के एंगल को हटवाया और जांच में जुट गई।

अधिकारी बोले :लोको पायलट की ओर से कंट्रोल रूम को दी गई सूचना के आधार पर तुरंत मौके पर गया। यहां पर रेलवे एंगल कहां से आया है, इसकी जांच की जा रही है। -संजय शुक्ला, आरपीएफ प्रभारी उप निरीक्षक

इलाज कराना कितना मुश्किल : तस्वीर में देख लें ये भीड़, एसएन मेडिकल कॉलेज का ऐसा है हाल ; बुजुर्गों की आफत

आगरा , एजेंसी।एसएन मेडिकल कॉलेज में आभा पोर्टल पंजीकरण के कारण पर्चा बनवाने में 2-3 घंटे लग रहे हैं, जिससे मरीजों की लंबी कतार लग रही है। भीड़ और अव्यवस्था के कारण बुजुर्ग मरीजों को सबसे ज्यादा परेशानी झेलनी पड़ रही है।आगरा के एसएन मेडिकल कॉलेज में पर्चा बनाने के लिए मारामारी हो रही है। दो-तीन घंटे में पर्चा बन पा रहा है। आभा पोर्टल पर पंजीकरण कराने में ज्यादा देरी हो रही है। इससे लंबी लाइन लग रही है। इसके निदान के लिए कॉलेज प्रशासन ने काउंटर भी नहीं बढ़ाए हैं। सोमवार को ओपीडी में कुल 3,184 मरीज आए।एसएन मेडिकल कॉलेज में पर्चा के लिए आधार कार्ड जरूरी कर दिया है। इसी से आभा पोर्टल पर पंजीकरण किया जा रहा है। इस वजह से पर्चा बनाने में अतिरिक्त समय लग रहा है। काउंटर भी नहीं बढ़ाए गए हैं, इससे लंबी लाइन लग रही है। सोमवार को भारी भीड़ के कारण देर तक खड़े रहने और धक्कामुक्की से लाइन में लगे बुजुर्गों की हालत खराब हो गई। इससे वे जमीन पर ही बैठ गए।पर्चा के बाद डॉक्टर को दिखाने, दवा लेने के लिए भी लंबी लाइन से गुजरना पड़ रहा है। प्राचार्य डॉ. प्रशांत गुप्ता ने बताया कि आभा पोर्टल पर पंजीकरण से मरीज के बार-बार पर्चा बनाने, जांच रिपोर्ट साथ लाने की जरूरत नहीं है। इससे मरीजों को सुविधा होगी। मरीजों के लिए काउंटर भी बढ़ाए जाएंगे।

ये बोले मरीज- :घंटों खड़े रहने से उखड़ आया पैरों में दर्द

सती नगर से आई भूदेवी ने कहा कि घुटने और सीने में दर्द की परेशानी पर एसएन में दिखाने आई। दो घंटे लाइन में लगने के बाद पर्चा बन पाया। दवा देने के लिए भी लाइन में लगी, देर तक खड़े रहने पर पैरों में दर्द उखड़ आया।

47 वर्षों में शून्य से शिखर पर पहुंची भाजपा

लखनऊ , एजेंसी। उत्तर प्रदेश में भाजपा की विकास यात्रा ऐसे राजनीतिक उतार-चढ़ाव की कहानी है, जिसने राज्य की सत्ता का समीकरण ही बदल दिया। साल 1985 में महज 16 सीटों से शुरुआत करने वाली भाजपा आज 255 विधायकों के साथ प्रदेश की निर्णायक शक्ति बन चुकी है।भाजपा के अब तक के इतिहास को देखें तो 1980 में गठन के बाद शुरुआती वर्षों में पार्टी हाशिये पर रही लेकिन 1990 के दशक में राम जन्मभूमि आंदोलन ने व्यापक जनसमर्थन दिलाया। 1991 के विधानसभा चुनाव में 221 सीटें जीतकर भाजपा ने पहली बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई और कल्याण सिंह मुख्यमंत्री बने।साल 1993 और 1996 में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी तो बनी लेकिन बहुमत के अभाव में सरकारें अस्थिर रहीं। वर्ष 1997 से 2002 के बीच कल्याण सिंह, राम प्रकाश गुप्ता और राजनाथ सिंह के नेतृत्व में सरकार चली लेकिन संगठनात्मक स्थिरता नहीं बन सकी।भाजपा का ग्राफ 2002 के बाद तेजी से गिरा। पार्टी 2002 में 88 सीटों से घटकर 2007 में 51 और 2012 में 47 सीटों पर सिमट गई। इस दौरान सपा और बसपा ने प्रदेश की राजनीति पर वर्चस्व बनाए रखा। भाजपा के लिए 2014 के लोकसभा चुनाव ने निर्णायक वापसी की जमीन तैयार की। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पार्टी ने यूपी की 80 में 71 सीटें जीतकर रिकॉर्ड बनाया।

बैंकॉक से लखनऊ पहुंचे यात्री से तीन करोड़ का गांजा बरामद

लखनऊ, एजेंसी। चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर तैनात एयर इंटेलीजेंस यूनिट ने बीती रविवार देर रात कार्रवाई करते हुए यात्री के पास से करीब तीन करोड़ रुपये का गांजा बरामद किया। आरोपी को गिरफ्तार कर उससे पूछताछ की जा रही है।एयरपोर्ट सूत्रों ने बताया कि एयर एशिया की फ्लाइट संख्या एफडी-146 से बैंकॉक से लखनऊ पहुंचे यात्री पर संदेह होने पर अधिकारियों ने उसे रात करीब 11:30 बजे रोका। पूछताछ के दौरान यात्री ने अपने बैग में प्रतिबंधित हाइड्रोपोनिक गांजा होने की बात स्वीकार की। बैगेज की तलाशी लेने पर लगभग 3.19 किग्रा हाइड्रोपोनिक गांजा बरामद किया गया। अधिकारियों के अनुसार, बरामद मादक पदार्थ की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब तीन करोड़ रुपये आंकी गई है।

सीएम योगी बोले- अपनों को पालने वालों ने आजमगढ़ को पिछड़ा रखा, डबल इंजन सरकार ने दी नई पहचान

वाराणसी , एजेंसी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को बिलरियागंज के मीरिया रेड़हा में डेयरी प्लांट का लोकार्पण करते हुए विपक्ष पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारों की सोच केवल स्वयं और परिवार तक सीमित थी, जिसके कारण ऋषि-मुनियों और क्रांतिकारियों की इस धरती को विकास से वंचित रखा गया। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि आजमगढ़ अब पहचान के संकट से बाहर निकलकर विकास की मुख्यधारा से जुड़ चुका है।उन्होंने अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध, वीर कुंवर सिंह, रांगेय राघव और महाराजा सुहेल देव को याद करते हुए कहा कि पूर्व की सरकारों ने कभी आजमगढ़, मऊ व बलिया के विकास के बारे में नहीं सोचा। विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए सीएम ने कहा कि पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे ने आजमगढ़ की कनेक्टिविटी को नया विस्तार दिया है। जो लखनऊ कभी 6 घंटे दूर था, अब वहां ढाई से तीन घंटे में पहुंचा जा सकता है। गोरखपुर

की दूरी अब मात्र डेढ़ घंटे की रह गई है।महाराजा सुहेलदेव जैसे राष्ट्रनायकों को पिछली सरकारों ने वोट बैंक की राजनीति के कारण भुला दिया था, लेकिन वर्तमान सरकार ने उनके नाम पर विश्वविद्यालय बनाकर उन्हें वास्तविक सम्मान दिया।

विकसित भारत का संकल्प :मुख्यमंत्री का मुख्य फोकस महिलाओं की आत्मनिर्भरता पर रहा। उन्होंने डेयरी प्लांट को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताते हुए कहा इस परियोजना से 56 हजार महिलाओं को सीधे तौर पर रोजगार मिल रहा है। वर्तमान में यहां प्रतिदिन 1.70 लाख लीटर दूध का कलेक्शन हो रहा है। झांसी, वाराणसी और लखनऊ के बाद अब 200 करोड़ के बजट से बरेली और प्रयागराज में भी डेयरी प्लांट स्थापित किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा, जब एक महिला आत्मनिर्भर होती है, तो पूरा परिवार और समाज सशक्त होता है। यही विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने का आधार है। उन्होंने महाराजा सुहेलदेव, वीर कुंवर सिंह और साहित्यकार हरिऔध की विरासत को नमन करते हुए जनता को विश्वास दिलाया कि डबल इंजन की सरकार बिना किसी भेदभाव के विकास कार्यों को गति देती रहेगी।

एनडीपीएस मामला...भगोड़े शुभम के दुबई भागने की पुष्टि, गृह मंत्रालय की रिपोट

वाराणसी। , एजेंसी।अपर सत्र न्यायाधीश/फास्ट ट्रैक कोर्ट (14वां) ने प्रह्लाद घाट, कायस्थ टोला निवासी शुभम जायसवाल को उद्घोषित अपराधी घोषित करने का आदेश जारी किया। कोर्ट में विवेचक एसआई दिनेश कुमार त्रिपाठी ने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर बताया कि प्राथमिकी दर्ज होने के बाद से ही आरोपी लगातार फरार है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने कई संभावित ठिकानों पर दबिश दी, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं लग सका।

न्यायालय ने दिए थे निर्देश :विवेचक ने न्यायालय को अवगत कराया कि आरोपी के खिलाफ पहले ही 22 जनवरी 2026 को गैर-जमानती वारंट जारी किया गया था। इसके बाद 24 फरवरी 2026 को धारा 84 बीएनएसएस के तहत उद्घोषणा जारी कर उसे 30 मार्च 2026 तक न्यायालय में उपस्थित होने का निर्देश दिया गया था।

आदेश की प्रति आरोपी के घर पर चस्पा करने के साथ ही

मुनादी भी कराई गई, बावजूद इसके आरोपी न्यायालय में पेश नहीं हुआ। जांच के दौरान गृह मंत्रालय से प्राप्त जानकारी में सामने आया कि शुभम जायसवाल 5 नवंबर 2025 को कोलकाता एयरपोर्ट से संयुक्त अरब अमीरात के दुबई शहर भाग गया। इस तथ्य के सामने आने के बाद न्यायालय ने इसे गंभीरता से लेते हुए आरोपी को भगोड़ा घोषित करने का आदेश पारित किया। न्यायालय ने निर्देश दिया है कि उद्घोषणा की प्रति सार्वजनिक स्थानों, आरोपी के निवास स्थान और न्यायालय परिसर में चस्पा कराई जाए।

मुझसे नहीं हो पाएगा, परीक्षा छूट जाएगी; डोनर आयुष और आरोपी डॉक्टरों की चैट से बड़ा खुलासा

कानपुर, एजेंसी। वहीं, पुलिस को फरार आरोपी डॉ. अली और आयुष के बीच हुई बातचीत भी मिली है, जिसे पुलिस साक्ष्य के रूप में केस डायरी में शामिल करेगी। जांच के दौरान सामने आई चैट पुलिस के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार आयुष इस पूरी प्रक्रिया से मानसिक रूप से परेशान हो चुका था।

इस प्रक्रिया को आगे नहीं बढ़ पाएगा :ऑपरेशन से कुछ दिन पहले रात करीब 10:30 बजे आयुष ने डॉ. अफजल को फोन किया, लेकिन कॉल रिसीव नहीं हुई। इसके बाद उसने लगातार कई मैसेज भेजे जिनका जवाब नहीं मिला। इसके बाद आयुष ने कई मैसेज भी किए। इसमें उसने साफ बताया कि वह अब इस प्रक्रिया को आगे नहीं बढ़ पाएगा।

दोनों के बीच करीब आधे मिनट तक बात हुई :उसने मैसेज में लिखा कि अब मुझसे नहीं हो पाएगा, परीक्षा भी छूट जाएगी। यह भी बताया कि वह सात से 10 दिन के लिए आया था लेकिन 12 दिन बीत जाने के बाद भी ऑपरेशन नहीं हुआ। इससे उसका समय और पढ़ाई दोनों प्रभावित हो रहे हैं। हालांकि, कुछ देर बाद जब आयुष ने व्हाट्सएप कॉल की तो डॉ. अफजल ने फोन उठा लिया। दोनों के बीच करीब आधे मिनट तक बात हुई।

आयुष ने जल्द ऑपरेशन करने का बनाया था दबाव :

पुलिस को आरोपी अली के साथ आयुष की चैट भी हाथ लगी है। इस चैट में अली ने आयुष के दस्तावेजों की जांच करते हुए उसके निवास के बारे में सवाल किए। आयुष ने खुद को देहरादून में रहने वाला बताते हुए मूल निवास बिहार का बताया। इसके बाद दोनों के बीच ऑपरेशन की तारीख और परीक्षा को लेकर बातचीत हुई।

दो महीने आराम करना पड़ेगा, परीक्षा छूट सकती

आयुष ने अप्रैल अंत में पेपर होने की बात कही और समय से काम पूरा कराने का आग्रह किया। अली ने जवाब में कहा कि ऑपरेशन के बाद कम से कम दो महीने आराम करना पड़ेगा, जिससे परीक्षा छूट सकती है। इस पर आयुष ने जल्द ऑपरेशन कराने का दबाव बनाया। कहा कि इसी माह प्रक्रिया पूरी कर दी जाए। यह रात करीब 8:15 बजे की है।

फरार आरोपी अली की तलाश तेज

अली ने लिखा है कि अगर टेलीग्राम पर न दिखे, तो जो नंबर भेजा है उस पर मैसेज भेज देना क्यूं कि वह बहुत ज्यादा टेलीग्राम का उपयोग नहीं करता है। मामले में डीसीपी एसएन कासिम आबिदी के अनुसार इन चैट से पूरे गिरोह की कार्यप्रणाली, संपर्क और सौदेबाजी के तरीके उजागर हो रहे हैं। फरार आरोपी अली की तलाश तेज कर दी गई है और डिजिटल साक्ष्यों के आधार पर जांच को आगे बढ़ाया जा रहा है।

गर्मी में बढ़ गया आग का खतरा, तब खराब हो गया हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म

आगरा, एजेंसी।इटली से मंगाया गया हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म फिर खराब हो गया है, जिससे ऊंची इमारतों में रेस्क्यू अभियान प्रभावित हो सकता है। दमकल विभाग ने इसे ठीक कराने के लिए विदेशी इंजीनियरों को बुलाया है, वहीं गर्मी में आग की घटनाओं से निपटने की तैयारी बढ़ाई गई है।बहुमंजिला इमारतों में आग की घटनाओं में बचाव अभियान के लिए इटली से मंगाया गया हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म फिर खराब हो गया है। यह 42 मीटर की जगह 25 मीटर तक ही खुल पा रहा है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी ने इटली से इंजीनियरों को बुलाया है। वहीं, तापमान बढ़ने पर देहात के इलाकों में दमकल की संख्या बढ़ा दी गई है।शहर में बहुमंजिला इमारतें बढ़ गई हैं। अग्निकांड की बड़ी घटनाएं इनमें हो चुकी हैं। दिसंबर 2025 में ओल्ड विजय नगर कॉलोनी में स्थित त्रिवेणी अपार्टमेंट की चौथी मंजिल पर फ्लैट में आग लगी थी तो हाल ही में संजय प्लेस स्थित ब्लॉक नंबर 25 में आग लग गई थी। ऊपरी

मंजिल पर रह रहे एक होटल के कर्मचारी फंस गए थे। उन्हें किसी तरह बाहर निकाला गया था।बहुमंजिला इमारतों में लगी आग को बुझाने के लिए वर्ष 2015 में इटली से 3.5 करोड़ रुपये की लागत से हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म खरीदा गया था। इसे ईदगाह स्थित फायर स्टेशन में रखा गया। इस प्लेटफॉर्म की मदद से दमकलकर्मी 42 मीटर (तकरीबन 14 मंजिल) तक रेस्क्यू ऑपरेशन कर सकते हैं। वर्ष 2019 में सेंसर की गड़बड़ी के कारण हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म खराब हो गया। स्थानीय इंजीनियर कमी को दूर नहीं कर सके। इस पर दिल्ली की कंपनी के इंजीनियर बुलाए, पर वह पार्ट्स लगा नहीं सके। इस पर इटली के इंजीनियर बुलाए गए, लेकिन कोविड के कारण वह नहीं आए। वर्ष 2022 में इटली के इंजीनियरों के आने पर प्लेटफॉर्म को सही कराया जा सका। अब यह फिर खराब हो गया है। सीएफओ देवेंद्र सिंह ने बताया कि हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म केवल 25 मीटर तक ही खुल पा रहा है। इटली की कंपनी के इंजीनियरों को बुलाने के लिए पत्राचार किया गया है।

हर स्टेशन पर कर्मचारियों को किया अलर्ट :सीएफओ ने बताया कि गर्मी आते ही हर फायर स्टेशन पर कर्मचारियों को अलर्ट कर दिया है।

प्रदेश की बिजली व्यवस्था में बड़ा बदलाव, खत्म की गई प्रीपेड मीटर की अनिवार्यता

लखनऊ, एजेंसी।प्रदेश में प्रीपेड स्मार्ट मीटर की अनिवार्यता खत्म हो गई है। अब सिर्फ स्मार्ट मीटर लगेंगे। इसके लिए केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण ने आदेश जारी कर दिया है। यह आदेश एक अप्रैल को ही अधिसूचित किया गया है। प्रदेश में करीब 78 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर लगे हैं, जिसमें 70 लाख स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगे हैं। पावर कार्पोरेशन की ओर से नए विद्युत कनेक्शन पर स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाया जा रहा है। प्रीपेड की अनिवार्यता का राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद विरोध कर रहा है। संसद में सवाल उठने पर केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने भी कहा कि प्रीपेड अनिवार्य नहीं है। यह उपभोक्ताओं की इच्छा पर निर्धर करता है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण ने कहा था कि राष्ट्रीय कानून विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 47(5) के तहत उपभोक्ताओं के परिसर पर पोस्टपेड व प्रीपेड मोड में लगाने की बात कही थी।

इसके बाद भी ज्यादातर उपभोक्ताओं के यहां प्रीपेड मीटर ही लगाए जा रहे थे।

विद्युत उपभोक्ता परिषद लगाता इसका विरोध कर रहा था। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण ने एक अप्रैल 2026 को नई अधिसूचना जारी कर दिया है। इसमें यह संशोधन कर दिया कि जिस भी क्षेत्र में संचार नेटवर्क मौजूद है वहां पर सभी बिजली कनेक्शन स्मार्ट मीटर के रूप में दिए जाएंगे। प्रीपेड की अनिवार्यता जो पहले थी उसे हटा दिया गया है। स्मार्ट मीटर के रूप में कनेक्शन तो दिए जाएंगे, लेकिन प्रीपेड मोड उपभोक्ताओं के विकल्प पर आधारित होगा।

उपभोक्ता परिषद की लड़ाई रंग लाई- वर्मा :राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष अवधेश कुमार वर्मा ने कहा कि संशोधित अधिसूचना जारी हो गई है। देशभर के विद्युत उपभोक्ताओं ने लड़ाई जीती है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण ने अपने आदेश में संशोधन कर दिया है अब पूरे देश में स्मार्ट मीटर तो लगा सकते हैं, लेकिन प्रीपेड मोड केवल उपभोक्ताओं की सहमति के आधार पर ही आगे बढ़ाया जाएगा।

विद्युत वितरण व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश : ऊर्जा विभाग के अपर मुख्य सचिव डा. आशीष कुमार गोयल ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि गर्मी में बिजली की मांग बढ़नी तय है। ऐसे में विद्युत वितरण लाइनों की ट्रिपिंग रोकने के प्रयास किए जाएं और पारेषण व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त रखा जाए।शक्ति भवन में सोमवार को ट्रांसमिशन कॉर्पोरेशन की समीक्षा बैठक में निर्देश दिया कि पारेषण के सभी कार्य निर्धारित समय में पूरे किए जाएं। उन्होंने मुख्यालय पर तैनात सभी अधिकारियों को आगामी शनिवार से 14 अप्रैल तक उपकेंद्रों में किए गए अनुरक्षण कार्यों का निरीक्षण करने का निर्देश दिया। गोयल ने स्पष्ट किया कि गर्मियों में ट्रिपिंग नहीं होनी चाहिए। यदि ट्रांसमिशन लाइनों की ट्रिपिंग के कारण विद्युत आपूर्ति में बाधा आती है, तो अधीक्षण और मुख्य अभियंताओं पर भी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने डिवीजन और जोन-वार डेटा मंगाकर विश्लेषण करने को कहा। फायर फाइटिंग की मॉक ड्रिल कराने और उपकेंद्रों व ट्रांसफार्मर की एजिंग एनालिसिस कर आवश्यक अनुरक्षण पर विचार करने को भी कहा।

निजीकरण विरोधी आंदोलन को देंगे धार :विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति ने निजीकरण के विरोध में आंदोलन तेज करने की तैयारी शुरू कर ली है। इसके लिए अंतिम निर्णय रविवार को होने वाली केंद्रीय कार्यकारिणी की बैठक में लिया जाएगा। समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि पॉवर कॉर्पोरेशन प्रबंधन ने अभी तक निजीकरण प्रस्ताव रद्द करने की घोषणा नहीं की है। विरोध करने वालों के खिलाफ लगातार उत्पीड़न किया जा रहा है। समिति ने प्रबंधन पर कई अन्य आरोप भी लगाए हैं। इनमें संविदा कर्मियों की बड़े पैमाने पर छंटनी शामिल है।

समस्याओं के दलदल में फंसा साइबर सिटी गुरुग्राम का विकास

गुरुग्राम, एजेंसी। नाम बड़े और दर्शन छोटे वाली कहावत साइबर सिटी के ऊपर सटीक बैठती है। पूरी दुनिया में आइटी, आटोमोबाइल, टेलीकाम, गारमेंट एवं मेडिकल हब के रूप में पहचान है लेकिन न साफ-सफाई बेहतर और न ही सड़कें दुरुस्त। ट्रैफिक जाम से अधिकतर इलाके कराह रहे हैं। हल्की वर्षा होते ही शहर के अधिकतर इलाके तालाब बन जाते हैं। कारण, न समय पर नालों की सफाई की जाती है और न ही रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के रखरखाव के ऊपर ध्यान है। वर्षा होने पर ही प्रदूषण का स्तर गिरता है अन्यथा 250 से अधिक एक्यूआइ हमेशा रहता है। यह हाल तब है जब मुख्यमंत्री हर महीने कम से कम चार से पांच बार शहर में होते हैं। समस्याओं पर सीधी नजर रखने एवं लोगों की समस्याओं का त्वरित समाधान करने के लिए हर जिले में जिला लोक संपर्क एवं कष्ट निवारण समिति का गठित है। जिले की समिति के अध्यक्ष मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी स्वयं हैं। गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष भी मुख्यमंत्री ही हैं। कष्ट निवारण समिति की बैठक से लेकर गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण की बैठक में शहर की सफाई

व्यवस्था, सड़कों की दयनीय हालत, जलभराव, ट्रैफिक जाम एवं प्रदूषण की समस्या पर निश्चित रूप से चर्चा की जाती है। इसके बाद भी सफाई व्यवस्था तक पटरी पर नहीं आ रही है। कई-कई दिनों तक सड़कों के किनारे कूड़े के ढेर लगे रहते हैं। आसपास से निकलना मुश्किल हो जाता है। मौखिक से लेकर लिखित शिकायत तक लोग अधिकारियों से करते हैं लेकिन कोई असर नहीं। पिछले साल सितंबर के दौरान मुख्यमंत्री ने एक महीने के भीतर यानी अक्टूबर तक सड़कों के गड्ढे भरने के निर्देश दिए गए थे। पांच महीने बाद भी शहर की एक भी सड़क पूरी तरह दुरुस्त नहीं है। वर्षा होते ही गड्ढों में पानी भर जाता है। इससे हर पल हादसा होने की आशंका गहराने लगती है। हर साल मानसून के दौरान जलभराव की समस्या गंभीर हो जाती है। इसके बाद भी अभी तक नालों की सफाई के ऊपर ध्यान नहीं। पिछले दिनों मुख्यमंत्री के हेलीकाप्टर की लैंडिंग हीरो होंडा चौक के कुछ दूरी पर संचालित डीपीजी डिग्री कालेज के परिसर में हुई थी।कालेज परिसर तक जाने का एक रास्ता मार्बल मार्केट से होकर है। रास्ते की हालत ऐसी है कि जैसे पहले कभी बनी ही नहीं। उसी रास्ते से मुख्यमंत्री का काफिला निकल गया। उम्मीद थी कि मुख्यमंत्री का काफिला निकलने के बाद रास्ते की तस्वीर बदल जाएगी लेकिन स्थिति जस की तस। हजारों विद्यार्थी उसी जर्जर रास्ते से होकर कालेज में पहुंचते हैं। पूरे दिन धूल का गुबार बना रहता है।

औद्योगिक क्षेत्रों की भी सुध नहीं: साइबर सिटी की पहचान पूरी दुनिया में औद्योगिक विकास की वजह है लेकिन औद्योगिक क्षेत्रों की भी सुध नहीं। उद्योग विहार जैसे औद्योगिक क्षेत्र में एक भी पार्किंग स्थल नहीं। कई सड़कों के किनारे जगह-जगह कूड़े के ढेर हैं। हल्की वर्षा होते ही अधिकतर इलाके तालाब बन जाते हैं। यही हाल सेक्टर-37, सेक्टर-34, कादीपुर, बसई, दौलताबाद एवं बेगमपुर खटोला औद्योगिक क्षेत्र की है। उद्यमी भी समस्याओं के समाधान की मांग करते-करते थक चुके हैं। सभी को उम्मीद थी कि जिले में मुख्यमंत्री की सक्रियता की वजह से तस्वीर तेजी से बदलेगी लेकिन ढाक के तीन पात। कई सालों से शहर में अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस जिला नागरिक अस्पताल एवं बस टर्मिनल बनाने की बात चल रही है। दोनों योजनाएं फाइलों से बाहर नहीं निकल रही हैं। जिला नागरिक अस्पताल की इमारत टूटे भी तीन साल से अधिक हो चुके हैं। अस्पताल न होने से लाखों लोग परेशान हैं। गांव सीही में बस टर्मिनल के लिए जमीन चिन्हित है। निर्माण कार्य कब शुरू होगा, कोई अता पता नहीं। निराश होकर लोगों ने दोनों के निर्माण जल्द शुरू कराने की मांग भी लोगों ने उठाने बंद कर दिए हैं।

जिला लोक संपर्क एवं कष्ट निवारण समिति के सदस्य व वरिष्ठ अधिवक्ता रविंद्र जैन स्वीकार करते हैं कि बैठकों में दिए गए निर्देशों के ऊपर गंभीरता से काम नहीं हो रहा है। उनका यह भी कहना है कि बैठक में कई शिकायतें ऐसी शामिल कर दी जाती हैं जो मुख्यमंत्री के स्तर का नहीं। मुख्यमंत्री को औचक निरीक्षण करना होगा, तब अधिकारियों के ऊपर दबाव बढ़ेगा। साइबर सिटी की एक भी सड़क ऐसी नहीं जो पूरी तरह दुरुस्त हो। अधिकारियों से उनकी उपलब्धि को लेकर सीधा सवाल होना चाहिए।

दिल्ली पुलिस ने फर्जी कॉल सेंटर का भंडाफोड़ कर 12 किए गिरफ्तार ; बेचते थे फर्जी रोडसाइड असिस्टेंस पॉलिसी

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस की सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट की एंटी-नारकोटिक्स सेल ने गुरु अर्जुन नगर में चल रहे एक फर्जी कॉल सेंटर को सफलतापूर्वक ध्वस्त कर दिया। इस सेंटर के जरिए आरोपी लोग 'आरडी सर्विसेस' नाम से फर्जी रोडसाइड असिस्टेंस पॉलिसी बेचकर लोगों से ठगी की जा रही थी। जानकारी के मुताबिक, 4 अप्रैल को रणजीत नगर पुलिस स्टेशन क्षेत्र के गुरु अर्जुन नगर स्थित रतन लाल कॉम्प्लेक्स में छापेमारी की गई थी। इस दौरान दो मालिकों समेत 10 टेली-कॉलर्स को गिरफ्तार किया गया था। कुल 12 लोगों को हिरासत में लिया गया। पुलिस के अनुसार, इस सेंटर के प्रोपराइटर पांडव नगर निवासी सौरभ (28 वर्ष) और शादीपुर निवासी शाहनवाज (28 वर्ष) हैं।

पकड़े गए टेली-कॉलर्स : अंजलि (25), बालजीत नगर काशिश (21), न्यू रणजीत नगर रजनी (20), सकुरबस्ती गनमान (21), रणजीत पूजा (30), प्रेम नगर कविता (26), बालजीत नगर मंजू (20), बालजीत नगर रक्षा (22), इंदरलोक इमरान (20), इंदरलोक अनु (29), करोल बाग

ठगी का तरीका: आरोपी लोगों को फोन पर कॉल करके बताते थे कि उनके वाहन में कहीं भी पंचर, ब्रेकडाउन या किसी भी इमरजेंसी में तुरंत मदद मिलेगी। विश्वास दिलाने के लिए कैश ऑन डिलीवरी (ष्टह्लष्ठ) का ऑफर देते और तीन से चार हजार रुपये में प्लास्टिक पॉलिसी कार्ड घर पर डिलीवर करने का वादा करते। लेकिन पैसे लेने के बाद हेल्पलाइन नंबर (कीपैड मोबाइल) पर कॉल करने पर कोई जवाब नहीं मिलता और न ही कोई सहायता दी जाती।यह फर्जी सेंटर पिछले 6 महीने से सक्रिय था। आरोपी लोगों के पास न तो कोई लाइसेंस था और न ही वैध रजिस्ट्रेशन।

कॉलिंग के लिए इस्तेमाल किए गए मोबाइल फोन: सभी आरोपी और बरामद सामान को रणजीत नगर पुलिस को सौंप दिया गया है। इस मामले में मुकदमा दर्ज कर आगे की जांच की जा रही है। पुलिस ने कहा कि पूछताछ में आरोपी और भी महत्वपूर्ण खुलासे कर सकते हैं। इस तरह की फर्जी रोडसाइड असिस्टेंस स्कीम से आम लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है।

गुरुग्राम से अगवा पति और दो बच्चों का 300 किमी दूर बरेली में सुराग, मां को 48 घंटे बाद मिले कलेजे के टुकड़े

गुरुग्राम, एजेंसी। गुरुग्राम के नाथूपुर में रहने वाली एक महिला के ऑटो चालक पति और दोनों बच्चे अपहृत होने के 48 घंटे बाद तीन सौ किलोमीटर दूर बरेली में आखिरकार मिल गए। बच्चे शनिवार शाम को पिता के साथ घर से सिकंदरपुर पहाड़ी हनुमान मंदिर गए थे, इस दौरान उन्हें अगवा कर लिया गया। सोमवार दोपहर जब महिला को बच्चे मिलने की जानकारी मिली तो वह तुरंत बरेली के लिए रवाना हो गई। बच्चे बरेली के अस्पताल में भर्ती हैं। दो दिन रोने और बिलखने के बाद जैसे ही कलेजे के टुकड़ों को मां ने देखा तो उन्हें गले लगा लिया और खुशी के आंसू बहने लगे। मूल रूप से बरेली के टांडा सिकंदरपुर गांव की रहने वाली पूजा ने शनिवार रात डीएलएफ फेस एक थाना पुलिस को पति मनोज और दो बच्चों मयूर व लक्ष्य के अपहरण होने की शिकायत दी थी। बताया था कि वह आठ सालों से परिवार के साथ नाथूपुर एस ब्लॉक में रह रही हैं। पति मनोज कुमार ओला-उबर में ऑटो चलाते हैं।

नहीं लग पा रहा था कोई सुराग: दो दिन पहले एक अंजान व्यक्ति मनोज कुमार से मिला। जिसने प्रतिदिन सुबह-शाम एस ब्लॉक से सिकंदरपुर पहाड़ी के पास हनुमान मंदिर चलने के लिए तय किया। शनिवार शाम जब व्यक्ति ने मंदिर चलने के लिए फोन किया तो मनोज अपने साथ दो बेटों को भी ले गए। इसके बाद तीनों लापता हो गए। इसके बाद महिला बच्चों और पति को पुलिस की मदद से ढूढ़ रही थीं, लेकिन कोई पता नहीं चल रहा था। पति और बच्चों के इस तरह लापता होने के बाद उनके आंसू थम नहीं रहे थे। उन्हें सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करें। सोमवार शाम दैनिक जागरण से फोन पर बातचीत में पूजा ने बताया गुरुग्राम पुलिस से उन्हें पति और बच्चों के टांडा सिकंदरपुर गांव में होने की जानकारी मिली थी। इस पर फौरन वह बरेली चली गईं। यहां एक हादसे में बच्चे घायल हो गए थे। अस्पताल में बच्चे मिले। बच्चों से मिलने के बाद अब जाकर सुकून मिला है। यह भी बताया कि पुलिस ने उनके पति को ढूढ़ लिया है। फिलहाल, पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है। डीएलएफ फेस एक थाना प्रभारी इंस्पेक्टर मनोज कुमार ने बताया कि मामले में पुलिस की एक टीम जांच में जुटी हुई थी। सीसीटीवी कैमरे व अन्य माध्यम से एक गाड़ी के बारे में पता चला था। इधर सोमवार अलसुबह बरेली पुलिस से बच्चों और ऑटो चालक की जानकारी मिली। पुलिस टीम को बरेली भेजा गया है। मनोज से घटना को लेकर पूरी जानकारी की जाएगी। इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

फरीदाबाद में जलभराव रोकने को खर्च होंगे 23.70 करोड़, एक महीने में पूरी होगी सीवर और नाले की सफाई

फरीदाबाद, एजेंसी। बारिश से होने वाले जलभराव से निपटने को लेकर नगर निगम 23.70 करोड़ रुपये खर्च करेगा। इसको लेकर निगम ने बजट तैयार कर लिया है। एक माह के भीतर सीवर और नाले की सफाई का काम पूरा करना होगा। निगम की इंजीनियरिंग ब्रांच के अनुसार नालों की सफाई को लेकर टेंडर लगा दिया गया है। औद्योगिक नगरी में 65 छोटे और बड़े नाले हैं। इसके साथ ही गौछी ड्रेन की सफाई को लेकर सबसे अधिक समय लगता है। मेयर और निगम आयुक्त खुद इंजीनियरिंग ब्रांच के अधिकारियों से नालों की सफाई को लेकर प्रतिदिन रिपोर्ट ले रहे हैं। इसके साथ ही वर्षा पानी निकासी को लेकर एक करोड़ रुपये की लागत से अलग-अलग ड्रेन बनाई जाएगी। विभाग की ओर से शहर मे ऐसी 15 जगहों को चिन्हित किया गया। जहां पर ड्रेन बनाने की जरूरत है।

गाजियाबाद में ड्यूटी जाते समय महिला के पैर पर आवारा कुत्ते ने काटा, हुआ गहरा घाव

गाजियाबाद, एजेंसी। घर से ड्यूटी जाते समय चिपियान के रहने वाले लखमीचंद की 45 वर्षीय पत्नी मंजू के पैर पर आवारा कुत्ते ने काट लिया। इससे पैर में गहरा घाव हो गया। तुरंत महिला को जिला एमएमजी अस्पताल की इमरजेंसी में भर्ती कराया गया। प्राथमिक उपचार के बाद महिला को एंटी रेबीज वैक्सीन के अलावा एंटी रेबीज सीरम भी लगाया गया। इसके अलावा कैलाभट्ठा स्थित सादिक पुलिया के पास रहने वाले अशोक के सात वर्षीय बेटे मोहित पर आवारा कुत्ते ने हमला कर दिया। वह डरकर जमीन पर गिर गया। कुत्ते ने मोहित के सीधे पैर पर काटकर गहरा जख्म कर दिया। आसपास के लोगों ने कुत्ते को भगाया। मोहित को भी एआरवी के

अलावा एआरएस लगाया गया है। पिछले 24 घंटे में शहर में आवारा कुत्ते, बंदर, बिल्ली और चूहे के काटने पर 612 लोगों ने अस्पताल पहुंचकर एंटी रेबीज वैक्सीन लगवाई है। इनमें 78 बच्चे भी शामिल हैं।दोपहर दो बजे तक लोग एआरवी लगवाने को लाइन में खड़े रहे। एआरवी कक्ष के पास आवारा कुत्ता भी घूमता रहा। जिला एमएमजी अस्पताल, जिला संयुक्त अस्पताल और डूंडाहेडा संयुक्त अस्पताल में सोमवार को जानवरों के काटने पर एंटी रेबीज वैक्सीन की पहली डोज लगवाने पहुंचे लोगों की संख्या 191रही। शेष ने दूसरी और तीसरी डोज लगवाई है। जानवरों के काटने पर घायल हुए नौ लोगों को इमरजेंसी में पहुंचने पर एआरवी के साथ ही एंटी रेबीज सीरम भी लगाया गया। इनमें पांच बच्चे शामिल हैं। इसके साथ ही जिला एमएमजी अस्पताल ,डूंडाहेडा अस्पताल और जिला संयुक्त अस्पताल में पांच दिन में एंटी रेबीज वैक्सीन की पहली, दूसरी और तीसरी डोज लगवाने वालों की संख्या 2990 हो गई है। जिला एमएमजी अस्पताल में सोमवार को पहुंचे 277 में से पहली डोज लगवाने वाले 117 में 47 बच्चे शामिल रहे। 36 पुरूष,26 महिला और आठ बुजुर्गों ने भी एआरवी लगवाई। जिला संयुक्त अस्पताल में 242 में से पहली डोज लगवाने वाले 43 लोगों में 21 बच्चे शामिल रहे। संयुक्त अस्पताल की इमरजेंसी में भी दो लोगों को एंटी रेबीज सीरम लगाया गया।

80 साल की उम्र में फरीदाबाद के धर्मपाल ने पूरा किया नेशनल खेलने का सपना, बैडमिंटन में जीते 2 पदक

फरीदाबाद, एजेंसी। अनुशासन और जुनून की बदौलत 80 साल के धर्मपाल ने नेशनल बैडमिंटन प्रतियोगिता में एकल और डबल्स दोनों में भाग लेकर दो पदक जीत कर अपना सपना पूरा किया। गोवा में आयोजित प्रतियोगिता में धर्मपाल खटाना ने 80 से अधिक आयु वर्ग में हिस्सा लिया था, जिसमें एकल में कांस्य और युगल वर्ग में रजत पदक जीता। धर्मपाल एक अन्य साथी सतीश के साथ जोड़ी बना कर उतरे थे। धर्मपाल खटाना उम्र के इस पायदान पर भी पूरी तरह से फिट हैं और उनकी फिटनेस से युवा भी मात खा जाएंगे। जिला बैडमिंटन एसोसिएशन के महासचिव संजय सपरा ने बताया कि पूरे टूर्नामेंट में धर्मपाल का प्रदर्शन पूरी तरह से शानदार रहा। नेशनल प्रतियोगिता में उनका सामना लीग मुकाबले में करीब 10 खिलाड़ियों से हुआ, लेकिन किसी भी मुकाबले में उनके चेहरे पर थकान नहीं दिखाई दी। वहीं, बैडमिंटन में अन्य खेलों की तुलना में शारीरिक गतिविधि अधिक होती है। उसमें पैर और हाथ दोनों अभी भी फुर्ती के साथ चलते रहते हैं। धर्मपाल खाने पीने में भी काफी सावधानी बरतते हैं। वह तली हुई चीजों से दूर रहते हैं। इसलिए भी फिट हैं। टेलीकम्युनिकेशन विभाग से उपनिदेशक के पद से सेवानिवृत धर्मपाल नौकरी के दिनों में भी बैडमिंटन प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। पदक विजेता खिलाड़ी की बेटी पारूल खटाना ने बताया कि उनके पिताजी प्रतिदिन एक घंटा सुबह बैडमिंटन खेलते हैं। बेटी के अनुसार पिताजी का सपना नेशनल खेलने का था, जो पूरा हो गया है।

गाजियाबाद के अस्पतालों का गजब हाल, कहीं डॉक्टरों पर अधिक बोझ तो कहीं मरीजों की संख्या कम

गाजियाबाद, एजेंसी। केंद्र और प्रदेश सरकार बेशक महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर गंभीर है और लगातार कार्यक्रम संचालित कर रही है, लेकिन स्वास्थ्य विभाग के स्थानीय अधिकारी इसके विपरीत काम कर रहे हैं। आलम यह है कि जहां मरीजों की संख्या अधिक है वहां चिकित्सक कम है और जहां मरीजों की संख्या कम है वहां चिकित्सकों की भरमार है। जिला स्वास्थ्य समिति के समक्ष रखी गई रिपोर्ट के अनुसार जिला महिला अस्पताल में केवल पांच चिकित्सक तैनात है। एक चिकित्सक औसतन प्रतिदिन

121 मरीज देख रही है। वहीं पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डासना में 12 चिकित्सक तैनात है। यहां एक चिकित्सक औसतन प्रतिदिन 43 मरीज देख रहे है।

सीएचसी लोनी में भी 12 चिकित्सक मरीजों की देखभाल कर रहे हैं। एक चिकित्सक औसतन प्रतिदिन 116 मरीज देख रहे हैं। डूंडा हेडा में बनाए गए संयुक्त अस्पताल में केवल छह चिकित्सक कार्यरत है लेकिन यहां मरीजों की संख्या भी कम है। एक चिकित्सक औसतन प्रतिदिन 46 मरीज ही देख रहे हैं। सीएचसी मुरादनगर में 10 चिकित्सक तैनात है और यहां औसतन एक चिकित्सक प्रतिदिन 85 मरीज देख रहे हैं। भोजपुर में पांच चिकित्सक तैनात हैं और एक चिकित्सक औसतन प्रतिदिन 76 मरीज देख रहे हैं। सीएचसी बम्हेटा में छह चिकित्सक कार्यरत हैं। एक चिकित्सक औसतन प्रतिदिन 29 मरीज ही देख रहे हैं। जिला एमएमजी अस्पताल में 21 चिकित्सक तैनात हैं।

नोएडा अग्निशमन विभाग अब रोबोट और अत्याधुनिक उपकरणों से होगा लैस, 154 करोड़ रुपये जारी

नोएडा, एजेंसी। अब गौतमबुद्ध नगर का अग्निमशमन विभाग रोबोट और 102 मीटर हाइड्रोलिक प्लेटफार्म जैसे अत्याधुनिक उपकरणों से लैस होगा। प्राधिकरण ने अग्निशमन विभाग को 21 तरीके उपकरण खरीदने के लिए 154 करोड़ रुपये जारी कर दिए हैं। जल्द ही यह उपकरण अग्निशमन विभाग के आग बुझाने वाले बेड़े में शामिल हो जाएंगे। अब संसाधनों के अभाव में बहुमंजिला इमारत में लगी आग को बुझा जाया सकेगा। रस्सी और टैम्प्रेचर शूट जैसे संसाधनों के अभाव में युवराज जैसे किसी अन्य व्यक्ति को जान

नहीं गंवानी पड़ेगी। यूपी का शो विंडो और हाइटेक माने जाने वाले नोएडा में इंजीनियर युवराज को नहीं बचाया जा सका था। ठंडे पानी में उतरने के लिए टैम्प्रेचर शूट, रस्सी और 102 मीटर हाइड्रोलिक प्लेटफार्म जैसे संसाधनों की कमी महसूस की गई थी। प्राधिकरण और अग्निशमन विभाग ने भी संसाधनों की आवश्यकता को समझा। युवराज की घटना से सबक लिया है।

इसके साथ ही जिले में हाइराइज सोसायटी से लेकर तंग गलियां जैसी कई जगह हैं। जहां पर पहुंचना मुश्किल होता है। बड़ी आग लगने, बाढ़ से लेकर भूंकप जैसी आपदा आने पर भी रोबोट जैसे संसाधनों कमी महसूस होती है। ऐसी परिस्थिति में कैसे बचाव किया जाए। ऐसे में समय में अत्याधुनिक उपकरण काफी मददगार साबित होते हैं। उन्नत तकनीक होने से आपदा से होने वाले बड़े नुकसान को भी कम किया जा सकता है।

मां के दूध में मौजूद प्रोटीन से होगा 'सूखी आंखों' का इलाज, दिल्ली एम्स ने किया क्लीनिकल ट्रायल

नई दिल्ली, एजेंसी। मोबाइल, लैपटॉप और टीवी स्क्रीन पर बढ़ती निर्भरता ने आंखों की समस्याओं को तेजी से बढ़ा दिया है। ड्राई आई डिजीज (डीईडी) यानी सूखी आंखों की समस्या अब केवल बुजुर्गों की नहीं रही, बल्कि बच्चों और युवाओं में भी आम होती जा रही है। आंखों में जलन, खुजली, चुभन, थकान और धुंधलापन ये लक्षण अब रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बनते जा रहे हैं। अब तक इस समस्या का मुख्य इलाज आई ड्रॉप और आर्टिफिशियल टियर्स तक सीमित रहा है, जोकि अस्थायी राहत देते हैं। हालांकि, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली के आरपी सेंटर फॉर आप्थेल्मिक साइंसेज के एक नए क्लीनिकल ट्रायल ने इलाज की दिशा बदलने के संकेत दिए हैं। इस ट्रायल में मां के दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन से बनी दवा लैक्टोफेरिन के परिणाम उत्सावर्धक रहे हैं। ट्रायल से जुड़े डाक्टर मान रहे हैं

कि लैक्टोफेरिन ड्राई आंखों के इलाज में रामबाण बन सकती है।

ट्रायल में करीब 200 मरीजों को शामिल किया गया: डॉ. नम्रता शर्मा और डा. सुजाता शर्मा के नेतृत्व में किए गए ट्रायल में करीब 200 मरीजों को शामिल किया गया। इन्हें तीन महीने तक दिन में दो बार 250 एमजी लैक्टोफेरिन टैबलेट दी गई। इसके बाद अगले छह महीने तक उनकी चिकित्सकीय निगरानी की गई। लैक्टोफेरिन लेने वाले मरीजों की आंखों की नमी में सुधार हुआ। आंसुओं की मात्रा और गुणवत्ता दोनों बेहतर हुई और सूखापन भी काफी हद तक कम हो गया। जलन, खुजली, चुभन और धुंधलापन में कमी आई।

आरपी सेंटर ने इस पर क्लीनिकल ट्रायल किया : शोधकर्ताओं ने कहा कि इस दवा को जापान में तैयार किया गया है और आरपी सेंटर ने इस पर क्लीनिकल ट्रायल किया है। इस पर किया गया परीक्षण साफ संकेत देता है कि ड्राई आई का इलाज अब सिर्फ आई ड्राप तक सीमित नहीं रहेगा। प्राकृतिक प्रोटीन आधारित उपचार भविष्य में ज्यादा प्रभावी और स्थायी समाधान दे सकते हैं। हालांकि, ट्रायल चरण में होने तथा ड्रग रेगुलेटरी की मंजूरी आदि की सरकारी औपचारिकताएं पूरी करने में और इसके आम लोगों तक पहुंचने में एक से डेढ़ वर्ष या उससे अधिक समय लग सकता है।

यह है लैक्टोफेरिन: लैक्टोफेरिन कोई कृत्रिम रसायन नहीं, बल्कि एक प्राकृतिक प्रोटीन है, जो मां के दूध में पाया जाता है और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। लैक्टोफेरिन सिर्फ लक्षणों को दबाने के बजाय समस्या की जड़ सूजन और आंसू उत्पादन की कमी पर काम करता है। ट्रायल में अभी दवा का भी नाम यही रखा गया है। 2030 तक शहरी भारत की 45 प्रतिशत आबादी प्रभावित हो सकतीचिकित्सीय आकलन के अनुसार 2030 तक शहरी भारत की 45 प्रतिशत आबादी ड्राई आई डिजीज समस्या से प्रभावित हो सकती है। इसमें 21 से 40 वर्ष की उम्र के लोग सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे।

दिल्ली-एनसीआर में शुरू हुई बारिश, दो दिन लगातार बरसेंगे बादल

नई दिल्ली, एजेंसी। मौसमी उतार चढ़ाव के बीच एक नए पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के चलते राष्ट्रीय राजधानी समेत एनसीआर के शहरों में मौसम फिर करवट लेने वाला है। मौसम विभाग ने मंगलवार और बुधवार दोनों ही दिनों के लिए तेज हवा के साथ हल्की वर्षा होने का पूर्वानुमान जताया है। इस बीच मंगलवार सुबह-सुबह दिल्ली-हृष्टक्र के कई इलाकों में बारिश शुरू हो गई। नोएडा में हल्की बूंदाबांदी से ऑफिस जाने वाले लोग भीगते दिखे तो वहीं फरीदाबाद में भी बूंदाबांदी के बीच बच्चे स्कूल जाते नजर आए।

तेज हवा चलने की संभावना : दोनों दिन न केवल बादल छाए रहेंगे बल्कि 30 से 50 किमी प्रति घंटे तक की रफ्तार से चलने वाली तेज हवाओं के साथ हल्की वर्षा के कई दौर होंगे। मौसम के इस बदलाव से तापमान में भी तीन से पांच डिग्री तक की गिरावट संभावित है। दोनों ही दिन के लिए येलो अलर्ट भी जारी हो चुका है। इस बीच सोमवार को मौसम का मिश्रित मिजाज देखने को मिला।बादलों की आवाजाही के बीच धूप भी निकली रही। वर्षा कहीं नहीं हुई। अधिकतम तापमान सामान्य से 1.8 डिग्री कम 33.3 डिग्री जबकि न्यूनतम तापमान सामान्य से 2.3 डिग्री कम 17.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हवा में नमी का स्तर 80 से 27 प्रतिशत रिकार्ड हुआ। दूसरी ओर दिल्ली की वायु गुणवत्ता फिलहाल साफ ही चल रही है।